सांध्य दैनिक

नई दृष्टिबिंदु

सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" ज्ञानवान लोगों से बहस करो, अगर हार भी गए तो ज्ञान ही मिलेगा
लेकिन, अज्ञानियों से बहस मत करो
क्योंकि तुम्हारे पास जो समझ है वो भी खो दोगे ...!!
अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–251 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, मंगलवार 29 सितंबर 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

बीएसपी-भिलाई निगम के 5.4 अरब टैक्स विवाद में मध्यस्थता का रास्ता

हाईकोर्ट ने सुलझाया सालों पुराना पेंच : सीनियर एडवोकेट विवेक रंजन तिवारी बने मीडिएटर

नई दृष्टिबिंदु / बिलासपुर

भिलाई इस्पात संयंत्र (बीएसपी) और नगर निगम भिलाई के बीच पिछले 7 साल से चल रहे 5 अरब 4 करोड़ के टैक्स विवाद में अब सुलह की उम्मीद जगी है।

छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट, बिलासपुर ने स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) बनाम स्टेट WPT 124/2019 और उससे जुड़ी अन्य याचिकाओं को मध्यस्थता केंद्र में भेज दिया है। जस्टिस नरेंद्र कुमार व्यास की सिंगल बेंच ने सभी पक्षों के अनुरोध पर सीनियर एडवोकेट विवेक रंजन तिवारी को मध्यस्थ नियुक्त किया है।

कोर्ट में क्या हुआ

सुनवाई में याचिकाकर्ता सेल/बीएसपी की ओर से सीनियर एडवोकेट पिंकी आनंद श्उ से, अधिवक्ता पवनश्री अग्रवाल और विक्रम शर्मा पेश हुए। राज्य शासन की ओर से एडिशनल एडवोकेट जनरल गैरी मुखोपाध्याय और अन्य पक्षों से सीनियर एडवोकेट फौजिया मिर्जा, अली अफजाल मिर्जा व पंकज अग्रवाल उपस्थित रहे।

विवाद क्या है - 2019 से चल रहा है केस

नगर निगम भिलाई के तत्कालीन आयुक्त ऋतुराज रघुवंशी ने 2019 में बीएसपी को नोटिस दिया था। आरोप था कि बीएसपी संपत्ति छिपा रही है और कम टैक्स दे रही है। निगम ने खुद सर्वे कर अंतर की राशि निकाली और 5 गुना पेनल्टी लगाकर 5 अरब 4 करोड़ 70 लाख 74 हजार 445 रुपए की डिमांड भेजी थी। टैक्स जमा न करने पर कुर्की वारंट तक जारी कर दिया था। इसके बाद बीएसपी हाईकोर्ट चली गई, तब से मामला लंबित था। बीच में आए कई आयुक्तों ने सुलह की कोशिश की, पर ठोस पहल नहीं हो पाई।

कोर्ट ने आदेश दिया

- सभी मामले 8 अक्टूबर 2026 को हाईकोर्ट मीडिएशन सेंटर में रखे जाएंगे
- मध्यस्थ पक्षों को 3-4 अवसर देकर आपसी सहमति से समाधान निकालेंगे
- 19 नवंबर 2026 को प्रगति रिपोर्ट के साथ मामला फिर हाईकोर्ट में सुना जाएगा
- तब तक पहले से मिली अंतरिम राहत अगली तारीख तक बरकरार रहेगी

अब निगम को उम्मीद

वर्तमान आयुक्त सुरुचि सिंह की पहल पर दोनों पक्ष मध्यस्थता के लिए राजी हुए हैं। निगम को उम्मीद है कि समझौता होने पर निगम को बड़ी आय होगी और वह आर्थिक रूप से मजबूत होगा। उच्च न्यायालय का मध्यस्थता का निर्देश एक अत्यंत दूरदर्शी और स्वागत योग्य कदम है। भिलाई इस्पात संयंत्र और नगर निगम, दोनों का मूल उद्देश्य भिलाई शहर की प्रगति, बेहतर नागरिक संरचना और जन-कल्याण सुनिश्चित करना है। एक प्रशासनिक दृष्टिकोण से, विधिक विवादों का सौहार्दपूर्ण और न्यायसंगत समाधान पूरे शहर के हित में होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस मध्यस्थता से एक स्थायी और प्रशासनिक रूप से सुदृढ़ समाधान निकलेगा, जो भिलाई के भविष्य और विकास को नई दिशा प्रदान करेगा।

सुरुचि सिंह, आयुक्त, नगर निगम भिलाई

एडीआर की रिपोर्ट में दलबदल का खुलासा

चार साल में 111 सांसद-विधायकों ने बदली पार्टी, जनता के जनादेश पर सवाल

विशेष संवाददाता / नईदिल्ली

चुनाव में जनता जिसे जिताती है, क्या नेता जीतने के बाद उसी पार्टी में रहते हैं? एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR) और नेशनल इलेक्शन वॉच की नई रिपोर्ट ने भारतीय राजनीति की इस कड़वी हकीकत को आंकड़ों में उजागर किया है। रिपोर्ट के मुताबिक 2022 से जुलाई 2026 के बीच देश में 111 मौजूदा सांसद और विधायकों ने पार्टी बदली है। इसमें 17 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

रिपोर्ट के मुख्य आंकड़े

- 26 लोकसभा सांसद - कुल सांसदों का लगभग 5%
- 7 राज्यसभा सांसद - कुल का 3%
- 78 विधायक - कुल का 2%

ADR के मुताबिक ये सिर्फ इस्तीफा देकर जाना नहीं है। इसमें 4 तरह के मामले शामिल हैं - व्यक्तिगत दलबदल (Defection), पार्टियों का औपचारिक विलय (Merger), इस्तीफा देकर उपचुनाव जीतना, और अयोग्य ठहराए जाने के बाद दूसरी पार्टी से फिर जीतना।

बंगाल का चर्चित केस

रिपोर्ट में पश्चिम बंगाल के 20 TMC सांसदों के मामले का जिक्र है, जिन्होंने 2024 में TMC से जीतने के बाद जून 2026 में 'नेशनलिस्ट सिटीजंस पार्टी ऑफ इंडिया' (NCPI) में विलय का दावा किया। मामला अभी लोकसभा स्पीकर के पास लंबित है, TMC ने दसवीं अनुसूची के तहत अयोग्यता की याचिका लगा रखी है।

कहां सबसे ज्यादा दलबदल?

नागालैंड - 32 मामले: इसमें 2025 में NDPP के 31 विधायकों का NPF में विलय सबसे बड़ा है।
पश्चिम बंगाल - 20 मामले
तेलंगाना - 9 मामले
गोवा और पंजाब - 8-8 मामले

किसे फायदा, किसे नुकसान?

सबसे ज्यादा नेता पाने वाली पार्टियां -
NPF (नागालैंड पीपुल्स फ्रंट) - 32
BJP - 29 (7 राज्यसभा सांसद + 22 विधायक)
NCPI - 20

सबसे ज्यादा नेता खोने वाली पार्टियां

NDPP - 25 नेता
TMC - 20 नेता
कांग्रेस - 19 नेता
इन तीन पार्टियों से ही कुल दलबदल के 58% मामले जुड़े हैं।

ADR के 3 बड़े सुझाव

1. सांसदों की अयोग्यता पर फैसला राष्ट्रपति और विधायकों पर राज्यपाल करें, वो भी चुनाव आयोग की सलाह पर, स्पीकर नहीं।
2. दलबदल मामलों के निपटारे के लिए तय समय-सीमा हो।
3. पार्टी बदलने वाले नेता के दोबारा चुने जाने तक उसे कोई सार्वजनिक पद न दिया जाए।

रिपोर्ट ने एक बार फिर दल-बदल विरोधी कानून की मजबूती पर बहस तेज कर दी है।

बीएसपी से 17 करोड़ के लोहा चोरी कांड में सीबीआई की एंट्री, राज्य सरकार ने दी सहमति

250 टन बरामद, 3250 टन चोरी का अनुमान, 21 गिरफ्तारियां, कई और आएंगे शिकंजे में

सांध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
भिलाई स्टील प्लांट से 250 टन लोहा स्क्रैप चोरी : BJP नेता भास्कर मुदलियार गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई-रायपुर

देश की नौसेना के युद्धपोतों तक लोहा देने वाले भिलाई स्टील प्लांट में चोरी का सबसे बड़ा कांड अब सीबीआई के पास जाएगा। 400 सीसीटीवी और 1200 से ज्यादा उक्तऋजवानों की सुरक्षा के बीच महीनों तक सैकड़ों टन लोहा गेट से बाहर निकलता रहा। अब राज्य सरकार ने इस मामले की जांच सीबीआई को सौंपने के लिए अधिसूचना जारी कर दी है।

कैसे खुला मामला - AK Traders पर छापा

26 मई 2026, मंगलवार को दुर्ग पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली। पुलिस ने अकलोरडीह-खदानपारा, हथखोज औद्योगिक क्षेत्र, प्लॉट नंबर 18 पर बने ए.के. ट्रेडर्स पर छापा मारा। वहां हाईवा और ट्रकों में फ्लू डस्ट (भट्ठी से निकलने वाली धूल) के नीचे लोहे की प्लेटें, बीम और कटिंग छिपी मिली। गोदाम में अलग-अलग ढेरों में भारी मात्रा में स्क्रैप था।

पुलिस के मुताबिक कुल करीब 250 टन लोहा बरामद हुआ, कीमत करीब 90 लाख रुपये। साथ में हाईवा, ट्रक, जेसीबी, हाइड्रा मशीनें जब्त हुई। कुल जब्ती 3 करोड़ 22 लाख रुपये की रही।

4-5 महीने नहीं, हजारों टन का खेल

पुलिस ने बताया यह खेल नया नहीं था। दुर्ग रेंज IG अभिषेक शांडिल्य ने जून में बताया कि पिछले 4-6 महीनों में 3250 टन से ज्यादा लोहा बाहर गया, अनुमानित कीमत 17 करोड़ 87 लाख 50 हजार रुपये।

IG ने खुलासा किया था कि प्लांट के भीतर फ्लू डस्ट के नाम पर एक दफ्तर चलता था, जहां से पर्दे के पीछे नेटवर्क ऑपरेट होता था।

FIR की कहानी

FIR नंबर 0277/2026, थाना पुरानी भिलाई। BNS की धारा 173 के तहत 27 मई 2026 रात 8.33 बजे दर्ज हुई। घटना 26 मई दोपहर 1 से शाम 6 बजे के बीच की।

शिकायतकर्ता कोई बाहरी नहीं, BSP के ब्लास्ट फर्नेस विभाग के महाप्रबंधक राजेश चमोर्शिकर हैं। उन्होंने बताया कि ब्लास्ट फर्नेस के मकदम यार्ड से फ्लू डस्ट की लोडिंग निविदा पर आर.डी.के. इंडस्ट्रीज के जरिए होती है। 26 मई को उसी फ्लू डस्ट के साथ वाहन CG-04 QT 8797 और CG-08 AW 1475 में स्क्रैप अवैध रूप से ले जाया जा रहा था। 27 मई को BSP अधिकारियों ने निरीक्षण कर उसे प्लांट की संपत्ति माना।

FIR में 5 नाम - संजय सिंह, मोहम्मद सलीम, चिंतानंद साहू, जितेश वर्मा और निर्मल सिंह। शुरूआती धाराएं 303(2) चोरी, 317(4) चोरी का माल खरीदना-बेचना, 3(5) साझा इरादा। जांच अधिकारी थाना प्रभारी अंबर सिंह भारद्वाज। FIR में कीमत शून्य लिखी थी, बाद में आंकड़ा जुड़ा।

अब CBI क्यों? - राजपत्र में अधिसूचना, धाराएं क्या कहती हैं?

303(2) चोरी - 3 साल तक सजा। 317(4) आदतन चोरी का माल खरीदना - उम्रकैद या 10 साल तक। 319(2) पहचान बनाकर धोखाधड़ी - 5 साल। 336(3) जालसाजी - 7 साल। 338 मूल्यवान दस्तावेज की जालसाजी, 340(2) जाली कागज को असली बताना। 111 संगठित अपराध, 112 छोटा संगठित अपराध, 61(2)(क) आपराधिक साजिश, 3(5) साझा इरादा। नोट - पुलिस की 18 सितंबर विज्ञप्ति में धारा 343(2) और छत्तीसगढ़ राज्य सुरक्षा अधिनियम 25, 26(1) भी है, जो राजपत्र में नहीं है, यह उइकमें स्पष्ट होगा।

सिलसिलेवार गिरफ्तारियां-ड्राइवर से लेकर बड़े अफसर

1. मौके से चालक चिंतानंद साहू, जितेश वर्मा और सुपरवाइजर निर्मल सिंह पकड़े गए। पूछताछ में कबूला - 30 से 40 बार इसी तरह माल निकाला। ट्रकों के नीचे बीम, ऊपर डस्ट। बदली नंबर प्लेट, GPS हटाना।
2. क्रेन ऑपरेटर, नापतौल करने वाला आकाश कुमार सिंह, अमित शर्मा उर्फ कैलाश शर्मा, सुपरवाइजर घनश्याम गुप्ता पकड़े गए।
3. मुख्य आरोपी ट्रांसपोर्टर संजय सिंह UP के देवरिया से पकड़ा गया। 16 जून 2026 को दुर्ग लाया गया, 7 दिन रिमांड। पुलिस के मुताबिक लॉकर से 50 लाख के गहने और 3 करोड़ की अचल संपत्ति के कागजात मिले। साथ में पिंटू उर्फ उपेंद्र ओझा भी पकड़ा गया।
4. 25 जुलाई के आसपास लोडर ऑपरेटर हेमंत देवांगन - 16वीं गिरफ्तारी।
5. 9 जुलाई को बड़ी कार्रवाई - BSP के स्टर-3 के GM हिमांशु भूषण मलिक (54), इंजीनियरिंग एसोसिएट मनोज कुमार देवांगन (58, रिसाली) गिरफ्तार। ASP सुखनंदन राठौर ने कहा - तकनीकी सबूतों पर गिरफ्तारी। बाद में BSP ने GM मलिक, मनोज देवांगन और नॉन-एग्जीक्यूटिव धनंजय वर्मा को निलंबित किया।
6. सुरक्षा में चूक पर CISF के 7 जवान निलंबित, अधिकारियों का तबादला, एक ठेकेदार फर्म का ठेका रद्द।
7. 18 सितंबर 2026 - पुलिस प्रेस विज्ञप्ति। रायपुर पावर एंड स्टील लिमिटेड, रसमड़ा के MD विनोद कुमार गर्ग (60, वालफोर्ट सिटी, भाठागांव, रायपुर) और डायरेक्टर संदीप कुमार सिंह (39, रइक्कॉलोनी, जुनवानी, स्मृति नगर, सुपेला) गिरफ्तार। आरोप - चोरी का स्क्रैप खपाना। इसके साथ कुल गिरफ्तारी 21 हुई।

राजपत्र में क्या लिखा है

GENCOR-35/7964/2026-HOME SECTION के तहत दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना अधिनियम 1946 की धारा 6 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राज्य सरकार ने थाना पुरानी भिलाई में दर्ज अपराध क्र. 277/2026 धारा 303(2), 317(4), 319(2), 336(3), 338, 340(2), 111, 112, 61(2)(क), 3(5) भारतीय न्याय संहिता के अनुसंधान हेतु दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना के सदस्यों की शक्तियों और क्षेत्राधिकार का विस्तार सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में करने की सहमति प्रदान की है। आदेश राज्यपाल के नाम से उप-सचिव आर.पी. चौहान द्वारा जारी किया गया है।

मतलब : पुरानी भिलाई थाने का यह मामला अब संगठित अपराध, धोखाधड़ी, फर्जी दस्तावेज और साजिश जैसी गंभीर BNS धाराओं के तहत CBI जांच के दायरे में आ गया है। अब CBI इस केस में कहीं भी जांच, छापा और गिरफ्तारी कर सकेगी।

जमानत पर क्या स्थिति?

कई आरोपियों को राहत मिली है। रिपोर्टों के मुताबिक संजय सिंह समेत 5 जमानत पर, 3 कारोबारियों को अग्रिम जमानत। हाईकोर्ट ने GM हिमांशु भूषण मलिक और पिंटू ओझा को नियमित जमानत दी। मनोज देवांगन को 13 अगस्त को जमानत मिली - कोर्ट ने कहा 9 जुलाई से जेल में थे, चार्जशीट नहीं आई। भाजपा नेता भास्कर मुदलियार का नाम भी गिरफ्तारी और फिर जमानत की सूची में आया। जमानत का मतलब बेगुनाही नहीं।

आगे क्या? : भिलाई स्टील प्लांट सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है, हर बीम देश की संपत्ति। उइकक्या उस सिस्टम को पकड़ेगी जिसमें इतने कैमरे और जवानों के बाद भी माल निकलता रहा? क्या अंदर के दफ्तर और हजारों टन के हिसाब का सच आएगा? जांच और अदालत में साबित होना बाकी है।

बेमेतरा में प्रेस वार्ता पर फिर बवाल

डेढ़ घंटे इंतजार के बाद ब्रीफिंग नाराज पत्रकार लौटे बिना कवरेज

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

उप मुख्यमंत्री अरुण साव के बेमेतरा प्रवास के दौरान मीडिया और सत्ता के बीच संवाद पर फिर सवाल खड़े हो गए हैं।

मामला न्यू सर्किट हाउस, बेरला रोड का है। सेवा संकल्प अभियान की समीक्षा बैठक के बाद दोपहर 2:30 बजे प्रेस वार्ता बुलाई गई थी। प्रिंट-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया समय पर पहुंचा, लेकिन वार्ता शुरू नहीं हुई। करीब डेढ़ घंटे इंतजार के बाद अचानक प्रेस वार्ता की जगह प्रेस ब्रीफिंग की सूचना दी गई, जिससे पत्रकारों में नाराजगी फैल गई। अधिकतर पत्रकार बिना कवरेज वापस लौट गए।

पत्रकारों का कहना - हम सवाल पूछने आए थे, सिर्फ सुनने नहीं। जिले में सड़क, पुल, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार जैसे कई जनसरोकार के मुद्दों पर सवाल करने थे। ब्रीफिंग से सवाल-जवाब का मौका खत्म हो गया।

पहली बार नहीं: इससे पहले 1 अगस्त 2026 को भी शाम 4 बजे बुलाई ब्रीफिंग में 2 घंटे इंतजार कराया गया और वार्ता कुछ मिनट में खत्म कर दी गई थी।

पत्रकारों ने कहा - मीडिया का काम सिर्फ सूचना छापना नहीं, जनता के सवाल उठाना भी है। समय का सम्मान हो और प्रेस वार्ता का स्वरूप स्पष्ट हो। इस पर शासन की ओर से आधिकारिक स्पष्टीकरण आना बाकी है।

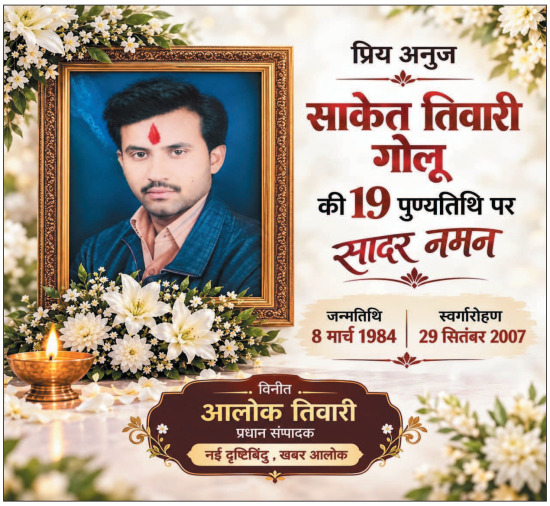

प्रत्येक कार्यकर्ता अपने दायित्व के अनुरूप भूमिका के निर्वहन के लिए तैयार रहे : जगन्नाथ पाणिग्रही

संगठन की मजबूती को लेकर भाजपा दुर्ग शहर विधानसभा की बैठक में संगठनात्मक कार्यों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश और सुझाव दिए

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भारतीय जनता पार्टी दुर्ग शहर विधानसभा की महत्वपूर्ण संगठनात्मक बैठक जिला भाजपा कार्यालय में जिला भाजपा अध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में दुर्ग संभाग प्रभारी जगन्नाथ पाणिग्रही एवं कैबिनेट मंत्री गजेंद्र यादव प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान महापौर अलका बाघमार, जिला महामंत्री दिलीप साहू, विनोद अरोरा, सभापति श्याम शर्मा सहित अपेक्षित श्रेणी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बैठक में संगठन की मजबूती, आगामी संगठनात्मक गतिविधियों तथा कार्यकताओं को सौंपे गए दायित्वों की प्रगति की समीक्षा की गई। साथ ही संगठनात्मक कार्यों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश एवं सुझाव दिए गए। बूथ स्तर तक संगठनात्मक गतिविधियों को गति देने और कार्यकताओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने पर भी चर्चा हुई।

दुर्ग संभाग प्रभारी जगन्नाथ पाणिग्रही ने अपेक्षित श्रेणी के पदाधिकारियों से उनके दायित्वों एवं अब तक किए गए कार्यों की क्रमवार समीक्षा की। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती प्रत्येक कार्यकर्ता की सक्रियता और जिम्मेदारी के प्रभावी निर्वहन पर निर्भर करती है। प्रत्येक कार्यकर्ता अपने दायित्व के अनुरूप भूमिका निभाने के लिए तैयार रहे तथा संगठनात्मक कार्यों में निरंतरता और प्रभावशीलता लाए। उन्होंने आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

संगठन की सक्रियता से मजबूत होगी पार्टी : गजेंद्र यादव

कैबिनेट मंत्री गजेंद्र यादव ने कहा कि भाजपा

का संगठन कार्यकताओं की मेहनत और समर्पण से मजबूत हुआ है। प्रत्येक कार्यकर्ता बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करने के लिए सक्रिय भूमिका निभाए। उन्होंने कहा कि संगठनात्मक गतिविधियों में नियमित सहभागिता और आपसी समन्वय से पार्टी के कार्यों को और गति मिलेगी।

बेहतर समन्वय के साथ कार्य करने का आह्वान

जिला भाजपा अध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक ने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता अपने-अपने दायित्वों का प्रभावी ढंग से निर्वहन करें। संगठन की योजनाओं एवं कार्यक्रमों को बूथ स्तर तक प्रभावी रूप से पहुंचाने के लिए पदाधिकारियों के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है। उन्होंने सभी कार्यकताओं से संगठन को मजबूत बनाने के लिए सक्रियता के साथ कार्य करने का आह्वान किया।

बैठक में आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों, दायित्वों की समीक्षा तथा बूथ स्तर तक संगठनात्मक गतिविधियों को प्रभावी बनाने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

इस अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य उषा टावरी, चंद्रिका चंद्राकर, पदमा देवांगन, जिला उपाध्यक्ष शिवेंद्र परिहार, अशोक राठी, राजीव पांडेय, मंत्री गायत्री वर्मा, नवीन पवार, सह कोषाध्यक्ष नीलेश अग्रवाल, कार्यालय मंत्री आसिफ अली, मीडिया प्रभारी राजा महोबिया, सोशल मीडिया प्रभारी रजनीश श्रीवास्तव, आईटी सेल जिला संयोजक जितेंद्र सिंह राजपूत, कार्यालय प्रभारी मदन वढई, मंडल प्रभारी एवं झुग्गी-झोपड़ी प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक दिनेश देवांगन, विनायक नातू, मंडल अध्यक्ष कमलेश फेकर, कौशल साहू, हरीश चौहान, मनमोहन शर्मा, महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री कुमुद बघेल, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अजय तिवारी, मंडल महामंत्री अमित पटेल, नवीन साहू, मनु साहू, मौसमी ताम्रकार, राकेश दुग्गड़, भूपेंद्र साहू, अनिल यादव, वीरेंद्र तन्ना, महेश देवांगन एवं एल्डरमैन कांतिलाल जैन सहित अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

खास खबर

गांधी-शास्त्री जयंती : निर्मल ज्ञान मंदिर में 30 सितंबर से 5 दिवसीय ध्यान-साधना शिविर

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई-रायपुर

निर्मल ज्ञान मंदिर कबीर आश्रम नेहरू नगर भिलाई में 30 सितंबर से 4 अक्टूबर तक पांच दिवसीय ध्यान-साधना शिविर का आयोजन होगा। महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जयंती के उपलक्ष्य में विशेष सत्र रखा गया है। शिविर का समापन समारोह के साथ बाल संस्कार शिविर भी होगा, जिसमें बच्चों, अभिभावकों और संत भक्तों के लिए खुला मंच रहेगा। शिविर के नियमः आयोजकों ने साधकों से नियम पालन की अपील की है – मोबाइल साइलेंट या बंद रखें, ध्यान कक्ष में बात न करें, निर्धारित आसन पर ही साधना-शयन, भोजन पात्र स्वयं साफ करें, आश्रम की साफ-सफाई में सहयोग, शिविर के दौरान बाजार भ्रमण, अखबार, मोबाइल देखने पर मनाही, परस्पर गपशप से बचकर मौनव्रत का पालन, संयमित भोजन। जानकारी मीडिया प्रभारी डॉ. दीनदयाल साहू ने दी।

श्रम यशस्वी पुरस्कार के लिए 5 अक्टूबर तक आवेदन आमंत्रित

दुर्ग। श्रम विभाग द्वारा श्रम के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले श्रमिकों और संस्थाओं को स्व. रामानुज प्रताप सिंहदेव स्मृति श्रम यशस्वी पुरस्कार प्रदान किया जाता है। पुरस्कार के तहत चयनित श्रमिक या संस्था को 2 लाख रुपए की राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026 के दौरान श्रम के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले श्रमिकों एवं संस्थाओं का उनके उल्लेखनीय योगदान के आधार पर चयन किया जाएगा। ऐसे श्रमिक एवं संस्थाएं पात्र होंगी, जिन्होंने मजदूरों की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य की दिशा में विशेष प्रभावी उपाय किए हों। साथ ही आलोच्य अवधि में कोई गंभीर दुर्घटना नहीं हुई हो तथा सुरक्षा नियमों के व्यापक प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया हो, जिससे प्रदेश का नाम श्रम जगत में गौरवान्वित हुआ हो इच्छुक श्रमिक एवं संस्थाएं 5 अक्टूबर 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

बाढ़ प्रभावितों से की मुलाकात

नई द्दष्टिबिंदु / भिलाई-दुर्ग

दुर्ग। संभाग आयुक्त एसएन राठौर और कलेक्टर अभिजीत सिंह ने रविवार को गणपति विसर्जन स्थल शिवनाथ नदी के जल स्तर का जायजा लिये। साथ ही मूर्ति विसर्जन के संबंध में अधिकारियो को प्रक्रिया प्रारंभ करते हुए सभी मूर्तियां विसर्जित कराने के निर्देश दिये।

वहीं कमिश्नर एसएन राठौर एवं कलेक्टर अभिजीत सिंह द्वारा भरदा स्थित राहत शिविर में बाढ़ प्रभावितों से मुलाकात कर व्यवस्था का जायजा लिया गया।

आज किए गए विकास और राष्ट्र निर्माण के प्रयासों का लाभ आने वाली पीढ़ियों को प्राप्त होगा-मंत्री यादव

विकासखंड स्तरीय चित्रकला और भाषण प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई अपनी प्रतिभा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत विकासखंड स्तरीय भाषण एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रूआबांधा में उत्साहपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में हुआ। कार्यक्रम में विकासखंड दुर्ग के विभिन्न संकुल केंद्रों से बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधिगण, पालकगण, शिक्षा विभाग के अधिकारी-कर्मचारी, शिक्षकगण एवं विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

अभियान के अंतर्गत आयोजित भाषण एवं चित्रकला प्रतियोगिता में 75 संकुल केंद्रों से कुल 163 विद्यार्थियों ने सहभागिता प्रदान की। मुख्य अतिथि स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव एवं विशेष अतिथि के रूप में दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चन्द्राकर कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसके साथ ही सुरेंद्र कौशिक, श्रीमती शीतला ठाकुर, अनुपम साहू, सारिका साहू, सविता धवस, दशरथ साहू, वेदप्रकाश साहू की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके अलावा शिक्षा विभाग की ओर से जिला शिक्षा अधिकारी जगजीत सिंह धीर, डीएमसी दुर्ग विनोद सिन्हा सहित विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने अपने उद्बोधन में बताया कि 17 सितंबर से 17 अक्टूबर 2026 तक देशभर में सेवा संकल्प अभियान संचालित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में विकसित छत्तीसगढ़ 2047 की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने विकसित भारत के संकल्प की तुलना एक पौधा लगाने

से करते हुए कहा कि जिस प्रकार आज लगाया गया वृक्ष आने वाली पीढ़ियों को फल, छाया और पर्यावरणीय लाभ प्रदान करता है, उसी प्रकार आज किए गए विकास एवं राष्ट्र निर्माण के प्रयासों का लाभ आने वाली पीढ़ियों को प्राप्त होगा। उन्होंने वर्ष 2014 के बाद प्रारंभ किए गए स्वच्छता अभियान का उल्लेख करते हुए कहा कि स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता का प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों के साथ बच्चों तक भी पहुंचा है।

उन्होंने स्वच्छता, आत्मनिर्भरता, स्वास्थ्य, तकनीक और कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में भारत की प्रगति से संबंधित अपने विचार विद्यार्थियों के समक्ष रखे। उन्होंने स्कूलों में शौचालय निर्माण, स्वास्थ्य सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, रक्षा क्षेत्र में भारत की क्षमता तथा कोविड-19 के दौरान विकसित टीकों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कृषि क्षेत्र में तकनीकी सहयोग एवं नवाचार की चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को देश की प्रगति में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद के विरुद्ध हुई प्रगति का भी उल्लेख किया। केबिनेट मंत्री श्री यादव ने भाषण एवं चित्रकला प्रतियोगिता में शामिल सभी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

कार्यक्रम के विशेष अतिथि विधायक दुर्ग ग्रामीण ललित चंद्राकर ने अपने उद्बोधन में विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को लेकर सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री के रूप में कार्यकाल का उल्लेख करते हुए देश के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों और विकसित भारत के लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने की बात कही। उन्होंने विद्यार्थियों को देश के भविष्य का आधार बताते हुए शिक्षा, अनुशासन, रचनात्मकता एवं राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की पूजा-अर्चना एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। विकासखंड शिक्षा अधिकारी विनोद शुक्ला ने स्वागत भाषण देते हुए विकसित भारत की अवधारणा पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विकासखंड दुर्ग के 75 संकुल केंद्रों से भाषण एवं चित्रकला प्रतियोगिता में 163 विद्यार्थियों ने सहभागिता की है। उन्होंने प्रतियोगिता के सफल संचालन के लिए निर्णायक मंडल की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि प्रतियोगिताओं में निष्पक्ष एवं पारदर्शी निर्णय सुनिश्चित किया जाएगा। प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता, विचार अभिव्यक्ति एवं कल्पनाशीलता प्रदर्शित करने का अवसर मिला।

आयोजित प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को आगामी जिला स्तरीय आयोजन मंर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम के दौरान जानकारी दी गई कि चित्रकला प्रतियोगिता से 20 तथा भाषण प्रतियोगिता से 5 उत्कृष्ट प्रतिभागियों का चयन जिला स्तरीय आयोजन के लिए किया गया है। इस अवसर पर विद्यार्थियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। विभिन्न संकुलों से आए विद्यार्थियों ने अपने विचारों, कल्पनाओं एवं रचनात्मक प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन किया।

सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत आयोजित भाषण एवं चित्रकला प्रतियोगिता विद्यार्थियों के लिए केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं रही, बल्कि उन्हें अपनी प्रतिभा और विचारों को सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर भी मिला। चित्रकला के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता का प्रदर्शन किया, वहीं भाषण प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपने विचारों एवं अभिव्यक्ति कौशल को प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता के सफल आयोजन से विद्यार्थियों में चित्रकला, भाषण, रचनात्मक अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक भावना का संचार हुआ।

कार्यक्रम में सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्रीमती राजेश्वरी चन्द्राकर, सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुश्री रश्मि ठाकुर, बीआरसी दुर्ग श्रवण कुमार सिन्हा, यूआरसी दुर्ग नेमसिंह साहू, जयन्त यादव, हरीश देवांगन, ऋषिकांत शुक्ला, धनेश्वर सिंह धुर्वे, एस.डी. कुरैशी, परमानंद देवांगन, ओमप्रकाश साहू, राकेश बैस, रामकुमार चन्द्राकर, अरविन्द कुमार बंजारे, केशव देवांगन, प्रीति पंसारी, नवीन भारद्वाज, अवनीश सिंह , सुमन प्रधान, रंजना देशमुख, उषा सिन्हा, उषा पाण्डेय, जागेश्वरी वर्मा, चन्द्रहास देवांगन, गिरीश वर्मा, योगेश वर्मा, राकेश धनकर, दीपक बुंदेला, अश्वनी पटेल, त्रिभुवन देशमुख, इंद्रेश बंजारे, विरेन्द्र कुमार पारकर, प्रणव मंडरिक, विजयशंकर डहरिया, जनार्दन साहू, पार्वती श्रीवास्तव, प्रवेश देवांगन, लीला राम साहू, नरेन्द्र देशलहरा, सुरेन्द्र स्वर्णकार, आनंद तिवारी, विरेन्द्र कावलिया, रघुनाथ सिंह देशमुख, चंद्रहास साहू , रमेश कुमार मढ़रिया, कुलेश्वर दिल्लीवार एवं समस्त संकुल समवयक सहित विभिन्न संकुल केंद्रों से आए प्रतिभागी विद्यार्थियों एवं प्रभारी शिक्षक उपस्थित रहे।

सरस्वती शिशु मंदिर में विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से गाए वंदे मातरम

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कसारीडीह में नमामि मातरम अभियान अंतर्गत वन्दे मातरम के 150वें वर्ष के अवसर पर एक समय, एक लय, एक स्वर वन्दे मातरम सामूहिक गायन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

विद्यालय की प्राचार्य कृपा शर्मा ने अतिथियों का परिचय कराया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शासकीय विद्यालय हनोदा की शिक्षिका डॉ. प्रज्ञा सिंह ने वन्दे मातरम को राष्ट्रशक्ति का प्रतीक बताते हुए कहा कि यह गीत राष्ट्रीय चेतना की आवाज बन चुका है। उच्च शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव ने वन्दे मातरम गीत की प्रत्येक पंक्ति का अर्थ और भावार्थ विस्तार से समझाया। श्री यादव ने कहा कि वन्दे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति सम्मान और समर्पण की भावना को अभिव्यक्त करने वाला राष्ट्रीय चेतना का

स्वर है। उन्होंने विद्यालयों में वन्दे मातरम के सामूहिक गायन को लेकर शासन की पहल की जानकारी भी दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं सरस्वती शिक्षा समिति की सहसचिव डॉ. शांति शर्मा ने वन्दे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर राष्ट्र की रक्षा और सम्मान के प्रति समर्पित रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सभी को राष्ट्रहित में वन्दे मातरम का सामूहिक गायन करना चाहिए। कार्यक्रम में उपस्थित आशीष शर्मा ने मैकाले की शिक्षा पद्धति के स्थान पर भारतीय संस्कृति एवं संस्कार आधारित शिक्षा के विकास पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अपनी सनातन संस्कृति और मूल्यों से जोड़कर भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन सांस्कृतिक प्रमुख पूर्णिमा भौमिक और आभार प्रदर्शन प्रधानाचार्य सुनील श्रीवास्तव ने किया।

इस अवसर पर दुर्ग नगर निगम के सभापति श्याम शर्मा, विभाग प्रमुख राघवेंद्र नाथ मिश्रा, सरस्वती शिक्षा समिति अध्यक्ष अरुण कुमार गुप्ता, सहसचिव डॉ. शांति शर्मा, कोषाध्यक्ष पूनमचंद जैन, सदस्य डॉ. मानसी गुलाटी, विद्यालय के पूर्व छात्र एवं पूर्व छात्र परिषद के जिला संयोजक राहुल वर्मा, प्राचार्य कृपा शर्मा, प्रधानाचार्य सुनील श्रीवास्तव सहित विद्यालय के आचार्य-दीदियां तथा बड़ी संख्या में अभिभावक मौजूद रहे।

राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने सखी वन स्टॉप सेंटर का किया निरीक्षण

घरेलू हिंसा, पारिवारिक विवाद सहित विभिन्न समस्याओं से पीड़ित महिलाओं को काउंसलिंग के साथ सहायता उपलब्ध कराई

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर दुर्ग प्रवास के दौरान दुर्ग स्थित सखी वन स्टॉप सेंटर का निरीक्षण कर वहां संचालित व्यवस्थाओं और सेवाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने संकटग्रस्त महिलाओं को उपलब्ध कराई जा रही काउंसलिंग, कानूनी सहायता, स्वास्थ्य सेवाओं एवं पुनर्वास संबंधी सुविधाओं की जानकारी ली।

सखी वन स्टॉप सेंटर में घरेलू हिंसा, पारिवारिक विवाद सहित विभिन्न समस्याओं से पीड़ित महिलाओं को काउंसलिंग के साथ आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। महिला एवं बाल विकास अधिकारी द्वारा राज्यमंत्री को सेंटर में दर्ज होने वाले प्रकरणों और

महिलाओं को प्रदान की जा रही सेवाओं के संबंध में जानकारी दी। निरीक्षण के दौरान श्रीमती सावित्री ठाकुर ने संकटग्रस्त महिलाओं को समय पर सुरक्षा, आवास, कानूनी सहायता और स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

राज्यमंत्री ने सेंटर में संचालित विभिन्न सुविधाओं का भी अवलोकन किया। इनमें परामर्श, विधिक सहायता, चिकित्सा सहायता, पुलिस सहायता तथा अस्थायी आश्रय की व्यवस्था शामिल है। निरीक्षण के दौरान सेंटर की व्यवस्थाओं, साफ-सफाई और स्टाफ द्वारा किए जा रहे कार्यों पर संतोष व्यक्त करते हुए राज्यमंत्री ने केंद्र की सराहना की। इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास अधिकारी अशोक शर्मा, जिला कार्यक्रम अधिकारी अजय साहू सहित वन स्टॉप सेंटर के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

तीज मिलन समारोह में शामिल हुए मंत्री गजेन्द्र यादव समाजजनों के साथ साझा की तीज पर्व की खुशियां

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग विधानसभा के ग्राम कोलिहापुरी में कोसरिया यादव समाज सर्किल कोड़िया के तत्वावधान में आयोजित तीज मिलन समारोह में केबिनेट मंत्री एवं दुर्ग शहर विधायक गजेन्द्र यादव शामिल हुए। उन्होंने समाजजनों के साथ तीज पर्व की खुशियां साझा कीं और सभी को तीज पर्व की शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर मंत्री श्री यादव ने कहा कि तीजा केवल आनंद, उमंग और उत्सव का पर्व नहीं, बल्कि हमर छत्तीसगढ़ की समृद्ध विरासत, संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों की पहचान है। तीज जैसे पारंपरिक आयोजन हमारी संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के साथ ही समाज में आपसी प्रेम और एकजुटता को

मजबूत करने का कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परंपराएं हमारी सामाजिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से हमारी बेटियां और नई पीढ़ी अपनी गौरवशाली परंपराओं से जुड़ती हैं। समाज की एकजुटता और सक्रिय सहभागिता सामाजिक विकास की मजबूत आधारशिला है। कार्यक्रम के दौरान मंत्री गजेन्द्र यादव ने समाजजनों से संवाद किये और उनकी आवश्यकताओं एवं सुझावों की जानकारी लिए, कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित नारी शक्ति का अभिवादन कर छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा महिलाओ के शसक्तिकरण हेतु संचालित योजनाओं की विस्तृत जानकारी देकर लाभान्वित होने अपील किये।

खास खबर

सीआईआई एमएसएमई कॉन्क्लेव 2.0 का उप मुख्यमंत्री शर्मा और उद्योग मंत्री देवांगन ने किया शुभारंभ

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजधानी रायपुर में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) छत्तीसगढ़ राज्य परिषद द्वारा आयोजित दो दिवसीय एमएसएमई कॉन्क्लेव 2.0 का आज उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा और उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन ने शुभारंभ किया। नवाचार एवं सतत औद्योगिक विकास द्वारा एमएसएमई का सशक्तिकरण विषय पर आयोजित कॉन्क्लेव के पहले दिन 250 से अधिक उद्यमियों, नीति-निमार्ताओं और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस दौरान ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, वित्तपोषण, तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और औद्योगिक विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। कॉन्क्लेव का उद्घाटन सत्र में उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि छत्तीसगढ़ के औद्योगिक और आर्थिक विकास में छोटे उद्योगों, कारखानों और कार्यशालाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। एमएसएमई के विकास के लिए बेहतर कानून-व्यवस्था, सुगम सड़क संपर्क और त्वरित स्वीकृतियां आवश्यक हैं। राज्य सरकार इन तीनों क्षेत्रों में बेहतर वातावरण उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि इसके लिए शासन द्वारा उद्योग नीति बनाई गई है जिसमें एमएसएमई के साथ समावेशी विकास दिखाई देता है।

उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन ने कहा कि राज्य की औद्योगिक विकास नीति के केंद्र में एमएसएमई हैं। सरकार का प्रयास है कि बस्तर और सरगुजा जैसे क्षेत्रों के उद्यमियों को भी उद्योग स्थापना और संचालन से संबंधित सेवाएं उतनी ही सहजता और तेजी से मिलें, जितनी राजधानी रायपुर में उपलब्ध हैं। छत्तीसगढ़ राज्य औद्योगिक विकास निगम (सीएसआईडीसी) के अध्यक्ष राजीव अग्रवाल ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों में तैयार भूमि और प्लग-एंड-प्ले अधोसंरचना विकसित होने से छोटी औद्योगिक इकाइयों को तेजी से उत्पादन शुरू करने में मदद मिलेगी।

एमएसएमई राज्य की औद्योगिक मूल्य-श्रृंखला की रीढ़

सीआईआई छत्तीसगढ़ राज्य परिषद के चेयरमैन एवं श्री बजरंग पावर एंड इस्पात लिमिटेड के निदेशक बजरंग गोयल ने एमएसएमई को राज्य की औद्योगिक मूल्य-श्रृंखला की रीढ़ बताते हुए कहा कि सीआईआई उद्योग और शासन के बीच सेतु के रूप में अपनी भूमिका निभाता रहेगा। सीआईआई छत्तीसगढ़ एमएसएमई पैनल के संयोजक एवं आरती स्पंज एंड पावर लिमिटेड के निदेशक आदित्य मूंदड़ा ने विषय प्रवर्तन करते हुए तकनीक, वित्त और अनुपालन सुधार को एमएसएमई के विकास के तीन महत्वपूर्ण आधार बताया। सीआईआई छत्तीसगढ़ राज्य परिषद के वाइस चेयरमैन एवं अविनाश ग्रुप के प्रबंध निदेशक आनंद सिंघानिया ने आभार व्यक्त किया।

वित्तपोषण और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस पर विशेष चर्चा

एमएसएमई विकास का वित्तपोषण विषय पर आयोजित सत्र में भारत सरकार के एमएसएमई मंत्रालय के संयुक्त सचिव विनम्र मिश्रा ने एमएसएमई क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर हुई प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वर्ष 2020 से अब तक 7.3 करोड़ से अधिक उद्यम पंजीयन हो चुके हैं तथा क्रेडिट गारंटी योजना में एक करोड़ गारंटी का आंकड़ा पार किया जा चुका है। उन्होंने अप्रैल 2025 से लागू संशोधित एमएसएमई वर्गीकरण सीमाओं के संबंध में भी जानकारी दी।

बस्तर के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचे मुख्यमंत्री साय, प्रभावित परिवारों से मिलकर जाना हाल

मकान, फसल और पशुधन की क्षति का संवेदनशीलता से सर्वे कर शीघ्र सहायता सुनिश्चित करने के निर्देश

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-बस्तर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बस्तर जिले के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर जमीनी स्थिति का जायजा लिया। मुख्यमंत्री श्री साय जगदलपुर नगर निगम क्षेत्र के डोंगाघाट पहुंचे और बाढ़ से प्रभावित परिवारों से आत्मीयतापूर्वक मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने प्रभावित लोगों को आश्वस्त किया कि संकट की इस घड़ी में राज्य सरकार उनके साथ पूरी संवेदनशीलता और तत्परता से खड़ी है तथा प्रत्येक प्रभावित परिवार को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने बाढ़ प्रभावित परिवारों को बड़ी राहत देते हुए शासन के प्रावधानों के तहत मिलने वाली सहायता के अतिरिक्त प्रत्येक प्रभावित परिवार को मुख्यमंत्री राहत कोष से 10-10 हजार की सहायता राशि प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बाढ़ से हुई क्षति का सर्वे और आकलन तेजी से पूरा कर पात्र परिवारों तक शासन की सहायता शीघ्र पहुंचाई जाए। श्री साय ने डोंगाघाट में बाढ़ प्रभावित परिवारों से मुलाकात की। उन्होंने प्रभावितों से बाढ़ के दौरान उत्पन्न परिस्थितियों, मकानों एवं घरेलू सामान को हुए नुकसान तथा वर्तमान में उपलब्ध कराई जा रही राहत के संबंध में जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रभावित परिवारों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हर जरूरी सहायता उपलब्ध कराएगी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि राहत कार्यों में किसी प्रकार की शिथिलता न हो। भोजन, स्वच्छ पेयजल, दवाइयां और अन्य आवश्यक सामग्री प्रभावित लोगों तक समय पर पहुंचाई जाए। विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों, महिलाओं तथा जरूरतमंद लोगों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए राहत व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

इंद्रावती के जलस्तर और प्रभावित इलाकों का किया अवलोकन

मुख्यमंत्री श्री साय ने इंद्रावती पुल पहुंचकर नदी के जलस्तर तथा आसपास के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का अवलोकन किया। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से जिले में बारिश एवं बाढ़ की स्थिति, प्रभावित गांवों और शहरी क्षेत्रों, राहत एवं बचाव कार्यों तथा प्रभावित परिवारों के लिए की गई व्यवस्थाओं की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने कहा कि जलस्तर में बदलाव और मौसम की

स्थिति पर लगातार निगरानी रखी जाए। निचले एवं संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरती जाए तथा आवश्यकता पड़ने पर राहत एवं बचाव दलों को तत्काल सक्रिय किया जाए। उन्होंने कहा कि लोगों की सुरक्षा सर्वोपरि है और किसी भी आपात स्थिति में सहायता पहुंचाने की व्यवस्था पूरी तरह तैयार रहनी चाहिए।

बाढ़ का पानी उतरने के बाद स्वास्थ्य और स्वच्छता पर विशेष ध्यान

मुख्यमंत्री श्री साय ने अधिकारियों से कहा कि बाढ़ का पानी कम होने के बाद प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से जुड़ी चुनौतियों पर विशेष ध्यान दिया जाए। लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाए। जलस्रोतों की सफाई एवं आवश्यक उपचार के साथ जलजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य विभाग की टीमों को सक्रिय रखा जाए। उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार स्वास्थ्य शिविर लगाने, दवाइयों की पर्याप्त उपलब्धता रखने और बीमारी के किसी भी संभावित प्रकोप पर तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि राहत कार्य केवल बाढ़ का पानी उतरने तक सीमित न रहें, बल्कि प्रभावित परिवारों के जीवन को सामान्य बनाने तक आवश्यक व्यवस्थाएं प्रभावी रूप से जारी रहें।

मकान, फसल और पशुधन की क्षति का शीघ्र हो आकलन

मुख्यमंत्री श्री साय ने अधिकारियों को बाढ़ से क्षतिग्रस्त मकानों, फसलों, पशुधन और अन्य संपत्तियों का संवेदनशीलता एवं पारदर्शिता के साथ सर्वे करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नुकसान का वास्तविक आकलन कर संबंधित परिवारों को शासन के प्रावधानों के अनुसार सहायता शीघ्र उपलब्ध कराई जाए। कोई भी पात्र प्रभावित परिवार सहायता से वंचित नहीं रहना चाहिए। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से राहत शिविरों और प्रभावित बस्तियों में नियमित रूप से पहुंचकर लोगों की जरूरतों की जानकारी लेने को कहा। उन्होंने निर्देश दिए कि राहत कार्यों में मानवीय संवेदनशीलता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए और प्रत्येक प्रभावित व्यक्ति तक आवश्यक मदद समय पर पहुंचे।

इस अवसर पर महापौर संजय पाण्डेय, नगर निगम सभापति खेमसिंह देवांगन, कमलचंद्र भंजदेव सहित अन्य जनप्रतिनिधि तथा कमिश्नर बस्तर डोमन सिंह, आईजी श्री बी.एन. मीणा, कलेक्टर आकाश छिकारा, पुलिस अधीक्षक शलभ सिन्हा सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

बाढ़ प्रभावित परिवारों के साथ पूरी संवेदनशीलता से खड़ी है सरकार : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज सुकमा जिले के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर प्रभावित परिवारों के बीच पहुंचकर उनका हाल जाना। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बाढ़ से प्रभावित शबरीनगर, श्रीनगर, लाइनपारा सहित विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने राहत एवं स्वास्थ्य शिविरों में पहुंचकर वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और प्रभावित परिवारों से आत्मीय संवाद कर उनकी समस्याएं एवं आवश्यकताएं जानीं।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रभावित परिवारों को भरोसा दिलाया कि संकट की इस घड़ी में राज्य सरकार पूरी संवेदनशीलता के साथ उनके साथ खड़ी है। बाढ़ से जिन परिवारों के मकान, घरेलू सामान अथवा अन्य संपत्ति को नुकसान पहुंचा है, उन्हें नियमानुसार सहायता उपलब्ध कराने के साथ राहत और पुनर्वास के लिए हर आवश्यक कदम उठाया जाएगा। उन्होंने शबरीनगर में स्थापित राहत एवं स्वास्थ्य शिविर का निरीक्षण किया। उन्होंने शिविर में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं, भोजन, पेयजल एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस दौरान मुख्यमंत्री राहत शिविर में रह रहे प्रभावित लोगों के बीच पहुंचे और उन्हें स्वयं भोजन परोसकर आत्मीयता के साथ उनका हालचाल जाना। मुख्यमंत्री बाढ़ प्रभावित परिवार के घर भी पहुंचे। उन्होंने परिवार के सदस्यों से बातचीत कर बाढ़ के दौरान उत्पन्न परिस्थितियों

और हुए नुकसान की जानकारी ली तथा उन्हें ढांढस बंधाया। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रभावित परिवारों की कठिनाइयों को समझते हुए सहायता पहुंचाने में किसी प्रकार का विलंब नहीं होना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि 23 एवं 24 सितंबर को हुई अतिवृष्टि से सुकमा जिले के अनेक क्षेत्रों में बाढ़ एवं जलभराव की स्थिति निर्मित हुई थी। प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों के साथ स्वास्थ्य शिविर संचालित किए जा रहे हैं। जरूरतमंद परिवारों को तात्कालिक सहायता, सूखा राशन एवं गर्म वस्त्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं। जलजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच के साथ पेयजल स्रोतों का क्लोरीनेशन और आवश्यक स्वच्छता संबंधी उपाय भी किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री साय ने कोंटा क्षेत्र में भी बाढ़ से हुए नुकसान का जायजा लिया। पिछले दिनों लगातार बारिश के कारण सबरी नदी में जलस्तर बढ़ने से नदी किनारे के गांवों के साथ कोंटा नगर पालिका के चार वार्डों में पानी भर गया था। कोंटा क्षेत्र में प्रभावितों के 19 राहत केंद्रों में ठहरने, भोजन, पेयजल एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं की गई है। उन्होंने बाढ़ से क्षतिग्रस्त मकानों को देखा और प्रभावित परिवारों से बातचीत की। उन्होंने अधिकारियों को बाढ़ से मकानों, घरेलू सामान तथा अन्य परिसंपत्तियों को हुए नुकसान का प्राथमिकता से आकलन करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि पात्र प्रभावितों को आरबीसी 6-4 के प्रावधानों के तहत मिलने वाली क्षतिपूर्ति राशि शीघ्र प्रदान की जाए।

करीब 300 परिवारों को 10-10 हजार रुपये की अतिरिक्त सहायता

मुख्यमंत्री साय ने बाढ़ के कारण घरों में रखे सामान को नुकसान पहुंचने से प्रभावित परिवारों के लिए अतिरिक्त आर्थिक सहायता के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऐसे करीब 300 प्रभावित परिवारों को मुख्यमंत्री राहत कोष से 10-10 हजार रुपये की अतिरिक्त सहायता प्रदान की जाएगी। यह राशि आरबीसी 6-4 के तहत पात्रता के अनुसार मिलने वाली सहायता के अतिरिक्त होगी। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि बाढ़ प्रभावित परिवारों को सामान्य जीवन की ओर लौटने में हर संभव सहयोग दिया जाए। क्षति के आकलन से लेकर सहायता राशि के वितरण तक पूरी प्रक्रिया संवेदनशीलता और तत्परता के साथ पूरी हो। कोई भी पात्र परिवार सहायता से वंचित न रहे।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत के बाद अब पुनर्वास के कार्यों को भी तेजी से आगे बढ़ाया जाए। जिन परिवारों ने इस आपदा में नुकसान सहा है, उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए शासन की सहायता समय पर उन तक पहुंचाना सर्वोच्च प्राथमिकता है। राज्य सरकार इस कठिन समय में प्रत्येक प्रभावित परिवार के साथ खड़ी है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

रोजगार सृजन और आर्थिक विकास का प्रभावी माध्यम बन सकते हैं नवाचारी विचार: राज्यपाल

कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय यूथ इनोवेशन और एंटरप्रेन्योरशिप कॉन्क्लेव का शुभारंभ, छत्तीसगढ़ सहित देश भर के 1500 से अधिक युवा यूथ कान्क्लेव में शामिल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका ने कहा है कि यदि युवाओं के नवाचार को उचित मार्गदर्शन, पूंजी और संस्थागत सहयोग मिले तो उनके विचार रोजगार सृजन और आर्थिक विकास के प्रभावी माध्यम बन सकते हैं। श्री डेका ने कहा कि वास्तविक आत्मनिर्भरता तभी संभव है जब नवाचार और उद्यमिता के अवसर राज्य के प्रत्येक क्षेत्र तक पहुंचें। उन्होंने विशेष रूप से आदिवासी बहुल बस्तर तथा सरगुजा और अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों से उभरते नवाचारों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

राज्यपाल ने कहा कि छत्तीसगढ़ में नवाचार एवं उद्यमिता विकास की सबसे ज्यादा संभावनाएं कृषि आधारित उद्योगों में है, इनसे किसानों एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अधिक लाभ मिलेगा। राज्यपाल श्री डेका इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा कृषि मंडपम में 28 से 30 सितम्बर तक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान नवा रायपुर, छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, छत्तीसगढ़ बायोटेक प्रमोशन सोसायटी तथा राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के सहयोग से आयोजित छत्तीसगढ़ यूथ इनोवेशन एवं एंटरप्रेन्योरशिप कॉन्क्लेव 2026 के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे।

श्री डेका ने इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के प्रथम एवं एकमात्र बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर-केंद्रित सुभाष चंद्र बोस बायोटेक्नोलॉजी इन्क्यूबेशन सेंटर के नवनिर्मित भवन का शुभारंभ भी किया। यह केंद्र प्रदेश में बायोटेक्नोलॉजी आधारित अनुसंधान, नवाचार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, स्टार्टअप विकास एवं उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संस्थागत आधार के रूप में कार्य करेगा। श्री डेका ने इन्क्यूबेशन सेंटर में निर्मित अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं एवं सुविधाओं का अवलोकन भी किया।

श्री डेका ने यूथ कॉन्क्लेव के दौरान युवा नेतृत्व वाले उद्यमों और संस्थागत नवाचारों को प्रदर्शित करने वाली नवाचार एवं स्टार्टअप प्रदर्शनी का शुभारंभ भी किया। उन्होंने प्रदर्शनी में 24 से अधिक स्टार्टअप्स द्वारा प्रदर्शित नवाचार, तकनीक और समाधानों का अवलोकन करते हुए युवा उद्यमियों, से उनसे स्टार्टअप के बारे में जानकारी प्राप्त की और उनका उत्साहवर्धन किया। यूथ कॉन्क्लेव 2026 में छत्तीसगढ़ सहित देश के अन्य भागों से 1200 से अधिक युवा छात्र, नवाचारी उद्यमि एवं स्टार्टअप स्थापित करने के आकांक्षी युवा शामिल हुए हैं।

इस अवसर पर विधायक धरसींवा अनुज शर्मा, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई के निदेशक डॉ. राजीव प्रकाश, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर के निदेशक डॉ. समीर बाजपेयी एवं नाबार्ड छत्तीसगढ़ के मुख्य महाप्रबंधक डी. के गावली भी उपस्थित थे।

यूथ कॉन्क्लेव 2026 में शामिल युवा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि वे शुरूआती असफलताओं से निराश न हों, बल्कि साहस के साथ शुरूआत करें, निरंतर प्रयास करते रहें और अनुभवी लोगों से मार्गदर्शन प्राप्त करें। उन्होंने वित्तीय संस्थानों, उद्योग जगत और निवेशकों से भी युवाओं की क्षमता एवं पूंजी के बीच मजबूत सेतु बनाने का आग्रह किया। श्री डेका ने आईजीकेवी आरकेवीवाई-रफ्तार एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर (आईजीकेवी आर-एबीआई) के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि संस्थान ने अब तक 400 से अधिक कृषि-आधारित स्टार्टअप्स को इनक्यूबेट किया है। इनमें 129 स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता मिली है तथा 14.93 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता प्रदान की गई है।

संस्थान के प्रयासों से 1,000 से अधिक उत्पाद विकसित हुए हैं, 93 महिला संस्थापकों को सहयोग मिला है और स्टार्टअप्स ने 85 पुरस्कार प्राप्त किए हैं। राज्यपाल ने कहा कि इन प्रयासों का प्रभाव एक लाख से अधिक किसानों तक पहुँचा है तथा 1,000 से अधिक प्रत्यक्ष और 7,000 से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं। संबंधित स्टार्टअप्स ने 200 करोड़ रुपये से अधिक का संचयी राजस्व अर्जित किया है और 27.06 करोड़ रुपये का निवेश जुटाया है। राज्यपाल ने स्टार्टअप पिचिंग प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ देते हुए आशा व्यक्त की कि यह कॉन्क्लेव छत्तीसगढ़ के युवा उद्यमियों के लिए नई संभावनाओं का मंच बनेगा।

विधायक अनुज शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि यूथ कॉन्क्लेव 2026 छत्तीसगढ़ में युवा उद्यमिता विकास एवं नवाचार की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि इस आयोजन में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के साथ आईआईटी भिलाई, एनआईटी रायपुर तथा आईआईआईटी नवा रायपुर जैसे प्रौद्योगिकी संस्थानों के एक मंच पर आने से यह आयोजन छत्तीसगढ़ में स्टार्टअप्स क्रांति का सूत्रधार बनेगा।

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुपति डॉ. गिरीश चंदेल ने बताया कि तीन दिवसीय कॉन्क्लेव में लगभग 1,200 प्रतिभागी शामिल हो रहे हैं। इस मंच पर विद्यार्थी, युवा उद्यमी, स्टार्टअप्स, नवोन्मेषक, निवेशक, उद्योग प्रतिनिधि तथा विभिन्न संस्थाएँ एक साथ जुड़ रही हैं। 24 से अधिक स्टार्टअप्स अपने नवाचार, तकनीक और समाधानों का प्रदर्शन कर रहे हैं तथा उन्हें अपने विचारों और व्यावसायिक मॉडलों की पिचिंग का अवसर भी मिल रहा है।

डॉ. चंदेल ने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं को केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला उद्यमी बनाने के लिए आवश्यक मेंटरशिप, निवेश, तकनीकी सहयोग, बौद्धिक संपदा संरक्षण, वित्तीय एवं बाजार संबंधी सहायता उपलब्ध कराने के लिए एक समग्र मंच तैयार करना है। डॉ. चंदेल ने कहा कि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय पिछले चार दशकों से कृषि शिक्षा, अनुसंधान और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि प्रयोगशालाओं और क्षेत्र में विकसित ज्ञान एवं तकनीक समाज तक पहुँचे, उत्पाद और उद्यम में परिवर्तित हो तथा किसानों एवं ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर पैदा हों। समारोह को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई के निदेशक डॉ. राजीव प्रकाश तथा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर के निदेशक डॉ. समीर बाजपेयी ने भी संबोधित किया।

शुभारंभ समारोह के दौरान आईजीकेवी राबी द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली के सहयोग से चयनित तीन स्टार्टअप्स को 25-25 लाख रुपए ग्रांट-इन-एड सहायता के चेक प्रदान किये गए जिनमें एनएसबी कंज्यूमर प्रोडक्ट प्राईवेट लिमिटेड, जेएच इन्क्यूबेटरर्स एन्ड मशरूम्स प्राईवेट लिमिटेड और अगोरा इको टूरिज्म प्राईवेट लिमिटेड शामिल हैं। इसके साथ ही आईजीकेवी राबी के इन्क्यूबेशन चरण सफलता पूर्वक पूर्ण करने वाले पांच स्टार्टअप्स को इन्क्यूबेशन ग्रेजूएशन सर्टिफिकेट भी प्रदान किए गए। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा कृषि महाविद्यालय रायपुर द्वारा प्रकाशित इंफॉर्मेशन ब्रोशर और ग्रामीण उद्यमिता पर केंद्रित एक पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के संचालक अनुसंधान डॉ. वी.के. त्रिपाठी ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

उल्लेखनीय है कि यूथ कॉन्क्लेव 2026 नवाचार अनुसंधान, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, स्टार्टअप एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण राज्य स्तरीय पहल है। कॉन्क्लेव के माध्यम से प्रदेश के युवाओं, विद्यार्थियों, शोधार्थियों, नवाचारकताओं, स्टार्टअप्स, उद्यमियों, निवेशकों, उद्योग प्रतिनिधियों, इनक्यूबेटर्स, शिक्षाविदों तथा विभिन्न शासकीय विभागों के अधिकारियों को एक साझा मंच उपलब्ध कराया जाएगा।

इस मंच के माध्यम से नवीन विचारों, अनुसंधान एवं तकनीकी नवाचारों को व्यावसायिक अवसरों एवं सफल उद्यमों में परिवर्तित करने के साथ-साथ राज्य में एक सुदृढ़ एवं आत्मनिर्भर स्टार्टअप इकोसिस्टम विकसित करने में सहायता प्राप्त होगी। कॉन्क्लेव में विशेष रूप से कृषि एवं एग्री टेक, खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, जैव प्रौद्योगिकी, ग्रामीण उद्यमिता, डिजिटल प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डीप-टेक, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरण एवं जलवायु स्मार्ट तकनीक, फिनटेक तथा अन्य उभरते क्षेत्रों में नवाचार एवं उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाएगा। उक्त कार्यक्रम में कुल चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान तकनीकी सत्र, विशेषज्ञों का व्याख्यान, स्टार्टअप प्रदर्शनी, स्टार्टअप पिचिंग, निवेशक-स्टार्टअप संवाद, नीति संवाद, मेंटरशिप एवं इनक्यूबेशन सत्र तथा उत्कृष्ट नवाचारों एवं स्टार्टअप्स को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। तीन शीर्ष युवा नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को क्रमशः एक लाख रुपए, पचहत्तर हजार रुपए तथा पचास हजार रुपए की राशि से पुरस्कृत किया जाएगा।

सुभाषचंद्र बोस इनक्यूबेशन सेंटर: अत्याधुनिक बायोटेक्नोलॉजी सुविधाओं से सुसज्जित केंद्र

सुभाष चंद्र बोस बायोटेक्नोलॉजी इन्क्यूबेशन सेंटर दो एकड़ क्षेत्र में विकसित किया गया है। यह केंद्र जैव-प्रौद्योगिकी अनुसंधान, नवाचार और उद्यमिता के लिए एक समर्पित मंच के रूप में कार्य करेगा। यहां हाई-टेक एवं अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, ठैस्.3 सुविधा, आधुनिक एनालिटिकल एवं टेस्टिंग सुविधाएं, किट एवं तकनीक विकास इकाइयां, वेस्ट ट्रीटमेंट सिस्टम तथा को-वर्किंग एवं इनक्यूबेशन स्पेस उपलब्ध हैं। केंद्र का उद्देश्य लैब से टेक्नोलॉजी और टेक्नोलॉजी से उद्यम की यात्रा को सहयोग देना है।

एग्री-बायोटेक्नोलॉजी, बायोफर्टिलाइजर एवं बायोकंट्रोल एजेंट्स, हेल्थ एवं डायग्नोस्टिक्स, फूड बायोटेक्नोलॉजी, पर्यावरणीय जैव-प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले स्टार्टअप्स, शोधकताओं और उद्यमियों को प्रयोगशाला सुविधाएं, प्रशिक्षण, मेंटरिंग, परीक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा। यह केंद्र प्रदेश में बायोटेक्नोलॉजी आधारित अनुसंधान, नवाचार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, स्टार्टअप विकास एवं उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संस्थागत आधार के रूप में कार्य करेगा। इसके माध्यम से शोधार्थियों एवं नवाचारकताओं को प्रोटोटाइप विकास, तकनीकी मार्गदर्शन, इनक्यूबेशन, मेटरशिप तथा उद्योग एवं निवेशकों से जुड़ने के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य किया जाएगा।

संपादकीय

बैठक से साबित किया कि फैसला मिलकर लेते हैं

चुनाव आयोग के तीनो सदस्यों के बीच किसी बात की असहमति को कड़ा विरोध मानकर माहौल बनाया जा रहा था कि चुनाव आयोग ने अब तक जो फैसले लिए हैं, वह गलत हैं,वह अवैध हैं ।चुनाव आयोग के यह साफ कर देने के बाद भी विपक्ष मानने को तैयार नहीं था कि तीनों ने सारे फैसले कुछ बातों पर असहमत होते हुए भी आम सहमति से लिए गए हैं ।देश में मांग भी की जा रही थी कि चुनाव आयोग को विज्ञप्ति जारी करने की जगह तीनों चुनाव आयुक्तों को बैठक लेकर साफ कर देना चाहिए कि उनके बीच कुछ बातों को लेकर असहमति होती है और वह निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा है लेकिन अंतिम फैसला आमसहमति से लिया जाता है यानी कि फैसले के कागज पर तीनों नहीं तो दो के दस्तखत होते ही हैं। यानी कानूनी तौर पर चुनाव आयोग ने जो फैसले लिए हैं वह सही तरीके के लिए गए हैं ।तीनों चुनाव आयुक्त ने एक बैठक लेकर यह साबित किया है कि उनके बीच असहमति हो सकती है लेकिन जब भी वह कोई फैसला करते हैं तो आमसहमति से करते है और संयुक्त बैठक में फैसलों की जानकारी देते भी हैं।

शनिवार को हुई चुनाव आयोग में बैठक आमसहमति से लिए गए फैसलों की जानकारी तीनों ने दी है और तीनों के बीच किसी तरह के विरोध को पूरी तरह खारिज कर दिया है। एसआईआर को लेकर चल रहे विवाद पर तीनों की बैठक में बताया गया है कि एसआईआर से सभी आदेश तीनों आयुक्तों की मंजूरी के बाद जारी किए गए हैं। फार्म 6 में किए गए बदलावों को उच्चतम न्यायालय ने बरकरार रखा है ।जिन लोगों के नाम एसआईआर में कट गए हैं,उनके दावे व आपत्तियों की समयसीमा बढ़ाई गई है ।यानी उनके नाम जोड़े जाएंगे। इसके लिए लोगों को चुनाव आयोग के दफ्तर नहीं आना होगा,बीएलओ उनके घर जाकर दस्तावेज लेंगे ।इसके अलावा वोटर लिस्ट में भी नाम जोडे जाएंगे ।चुनाव आयोग अपने बैठकों का सभी एजेंडा पहले से साझा करेगा। यह तमाम फैसले तीनों आयुक्त ने लिए है और तीनों ने बैठक में बताए हैं। यानी विपक्ष ने जो सवाल उठाए तीनों आयुक्तों ने बैठक में जवाब दे दिया है और साबित कर दिया है कि विपक्ष जो कुछ कह रहा है या प्रचारित कर रहा है,वह सही नहीं है ।यानी राहुल गांधी व विपक्ष जिस नरैटिव के गुब्बारे में दो दिन से हवा भर रहे थे और उसे गंभीर मुद्दा बताने का प्रयास कर रहे थे, उसकी हवा चुनाव आयोग की बैठक के बाद निकल गई है।

वर्ष 1993 के पहले चुनाव आयोग में मुख्य चुनाव आयुक्त ही हुआ करते थे,इसलिए चुनाव आयोग में किसी मुद्दे पर असहमति का सवाल ही नहीं होता था लेकिन 1993 के बाद चुनाव आयोग को तीन सदस्यीय संस्था बनाया गया तो माना तो यही गया था कि उनके बीच किसी मुद्दे पर असहमति हो सकती है, इसलिए यह नियम बनाया गया था कि यदि किसी मुद्दे पर असहमति तो फैसला दो के बहुमत से लिया जाए। वर्ष 1993 में चुनाव आयोग को स्थायी रूप से तीन सदस्यीय संस्था बनाए जाने के बाद से ही उसके भीतर मतभेद सामने आते रहे हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन और निर्वाचन आयुक्त एम.एस. गिल तथा जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति के बीच तीखे मतभेद हुए थे। साल 2009 में मुख्य चुनाव आयुक्त एन. गोपालस्वामी ने निर्वाचन आयुक्त नवीन चावला को हटाने की सिफारिश राष्ट्रपति से की थी।2019 में निर्वाचन आयुक्त अशोक लवासा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के विरुद्ध आदर्श आचार संहिता की शिकायतों पर आयोग के बहुमत से अलग राय दर्ज की थी ।ऐसे में आज यदि दो निर्वाचन आयुक्त किसी प्रक्रिया पर टिप्पणी या आपत्ति दर्ज करते हैं यह कोई संवैधानिक संकट है, कोई ऐसा मानता है तो यह इतिहास और कानून दोनों की जानबुझकर की गई अनदेखी है।

इस बार हुआ क्या है? इस बार चुनाव आयोग के अनुसार, निर्वाचन आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने विशेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े कुछ निर्णयों पर पिछले दस महीनों में कम-से-कम 14 बार आपत्तियां या टिप्पणियां दर्ज कीं। आयोग ने इसे स्वीकार किया है,इसे आंतरिक विचार-विमर्श का हिस्सा बताया है तथा कहा है कि अंतिम निर्णय सर्वसम्मति से लिए गए। यह समझने वाली बात यह है कि असहमति दर्ज करने का मतलब फैसले में शामिल नहीं होना नहीं लेकिन यह समझने व समझाने का प्रयास किया गया। यदि किसी संस्था में सवाल पूछने की अनुमति ही न हो तो वह संस्था मजबूत नहीं मानी जाती है लेकिन सवाल पूछे जाने के बाद कानून के मुताबिक अंतिम फैसला हो, उसका रिकॉर्ड रहे और उस फैसले को चुनौती देने की वैधानिक व्यवस्था हो तो लिए गए फैसले को गलत नहीं कहा जा सकता। यहां यह सवाल उठना भी स्वाभाविक है कि चुनाव आयोग के फैसलों का मुल्यांकन उनके मतभेदों के आधार पर क्यों किया जा रहा है। चुनाव आयोग के फैसलों का मूल्यांकन तो उसके परिणाम से किया जाना चाहिए। चुनाव आयोग ने 2025 के बाद जो चुनाव कराए हैं। क्या निष्पक्ष नहीं थे, क्यों पिछले चुनावों से बेहतर नहीं थे, क्या पिछले चुनावों से ज्यादा लोगों ने वोट नहीं डाले।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में 67.13 प्रतिशत मतदान 1951 के बाद राज्य में सबसे अधिक रहा। महिला मतदाताओं की भागीदारी 71.78 प्रतिशत रही। कहीं कोई पुनर्मतदान नहीं कराया गया और एसआईआर के बाद मतदाता सूची में गलत तरीके से नाम जोड़ने या हटाने के संबंध में कोई अपील प्राप्त नहीं हुई। 2026 में तमिलनाडु में लगभग 85.05 प्रतिशत मतदान दर्ज हुआ। केरल में 78.03 प्रतिशत मतदान हुआ, जो पिछले विधानसभा चुनाव से अधिक था। असम में 85.38 प्रतिशत और पुडुचेरी में 89.83 प्रतिशत मतदान हुआ। दोनों राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश ने विधानसभा चुनावों में अपने अब तक के सर्वोच्च मतदान का रिकॉर्ड बनाया ।राहुल गांधी व विपक्ष को निरंतर हार के कारण चुनाव आयोग की सफलता दिखाई नहीं देती है। जबकि हकीकत यह भी है कि चुनाव आयोग बेहतर चुनाव करा रहा है और उसके कारण कई राज्यों में कांग्रेस व विपक्ष भी जीते है।

सू- दोकू क्र.174

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.173 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

मृत्यु के बाद भव्य श्राद्ध, पर जीते-जी बुजुर्गों व माता-पिता की उपेक्षा क्यों?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं

वैश्विक स्तरपर भारत की हजारों वर्षों पुरानी सभ्यता में माता-पिता,गुरु और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता को केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं,बल्कि जीवन-मूल्य माना गया है। इसी भावना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्वरूप है पितृ पक्ष,जिसमें मनुष्य अपने दिवंगत पूर्वजों को स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करता है ।वर्ष 2026 में तिथियों को लेकर 26 और 27 सितंबर का कुछ भ्रम दिखाई दे रहा है,किंतु मीडिया में आई पंचांग गणना के अनुसार 26 सितंबर 2026,शनिवार को भाद्रपद पूर्णिमा और पूर्णिमा श्राद्ध है,जबकि मुख्य पितृ पक्ष का आरंभ 27 सितंबर 2026, रविवार को प्रतिपदा श्राद्ध से होगा और 10 अक्टूबर 2026,शनिवार को सर्वपितृ अमावस्या के साथ इसका समापन होगा। पूर्णिमा श्राद्ध 26 सितंबर को पितृ पक्ष से ठीक पहले पड़ता है। प्रतिपदा तिथि 26 सितंबर की रात प्रारंभ होने के कारण भी दोनों तारीखों को लेकर भ्रम पैदा होता है।

सर्वपितृ अमावस्या 10 अक्टूबर को है। इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से 26 सितंबर का भी श्राद्ध संबंधी महत्व है,लेकिन प्रतिपदा से आरंभ होने वाला पितृ पक्ष 27 सितंबर से माना जाना अधिक सटीक है ।परंतु पितृ पक्ष 2026 का सबसे बड़ा प्रश्न पंचांग की तारीख नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक चरित्र की तारीख बदलने का है। जिस देश की संस्कृति 'मातृ देवो भव,पितृ देवो भव' का संदेश देती है,उसी समाज के सामने आज यह असहज प्रश्न खड़ा है कि कहीं हम मृत्यु के बाद माता-पिता के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने में तो आगे नहीं बढ़ रहे, लेकिन उनके जीवित रहते हुए उनके लिए समय, संवाद, सम्मान और सहारा देने में पीछे तो नहीं हट रहे? तकनीकी और डिजिटल युग ने दुनिया को हथेली पर ला दिया है, परंतु कई परिवारों में एक ही घर के सदस्यों के बीच भावनात्मक दूरी बढ़ने की चिंता भी लगातार व्यक्त की जाती है। नई पीढ़ी शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय और वैश्विक अवसरों के कारण शहरों तथा विदेशों तक पहुंच रही है जो स्वयं में सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक प्रगति है लेकिन इस प्रगति का अर्थ माता-पिता और बुजुर्गों से भावनात्मक संबंध समाप्त होना नहीं हो सकता ।तकनीक समस्या नहीं है; समस्या तब है जब सुविधा संवेदना की जगह लेने लगे।

साथियों बात अगर हम 26 सितंबर से 10 अक्टूबर 2026 तक प्रत्येक दिन के श्राद्ध को समझने की करें तो 26 सितंबर 2026, शनिवार- पूर्णिमा श्राद्ध,27 सितंबर, रविवार-प्रतिपदा श्राद्ध, 28 सितंबर,सोमवार- द्वितीया श्राद्ध, 29 सितंबर, मंगलवार- तृतीया श्राद्ध और महाभरणी श्राद्ध 30 सितंबर,बुधवार- चतुर्थी और पंचमी श्राद्ध, 1 अक्टूबर, गुरुवार- षष्ठी श्राद्ध, 2 अक्टूबर, शुक्रवार- सप्तमी श्राद्ध, 3 अक्टूबर, शनिवार- अष्टमी श्राद्ध, 4 अक्टूबर, रविवार- नवमी श्राद्ध, 5 अक्टूबर, सोमवार- दशमी श्राद्ध, 6 अक्टूबर, मंगलवार- एकादशी श्राद्ध, 7 अक्टूबर, बुधवार- द्वादशी और मघा श्राद्ध, 8 अक्टूबर, गुरुवार- त्रयोदशी श्राद्ध, 9 अक्टूबर, शुक्रवार- चतुर्दशी श्राद्ध, 10 अक्टूबर शनिवार सर्वपितृ अमावस्या

साथियों,सोशल मीडिया पर समय-समय पर ऐसे मार्मिक वीडियो,समाचार और दावे सामने आते रहते हैं जिनमें कहीं वृद्ध माता-पिता को अकेला छोड़ने, कहीं बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और कहीं संतान द्वारा अंतिम समय में भी उपस्थित न हो पाने जैसी घटनाएं दिखाई जाती हैं। प्रत्येक वायरल वीडियो की स्वतंत्र सत्यता जांचे बिना उसे पूरे समाज का प्रतिनिधि तथ्य नहीं माना जा सकता, लेकिन ऐसी घटनाएं एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न अवश्य खड़ा करती हैं,यदि माता-पिता जीवित रहते हुए हमारी उपस्थिति, प्रेम और सहारे के लिए तरसते रहें, तो उनके निधन के बाद विशाल आयोजन महंगे कर्मकांड और सार्वजनिक प्रदर्शन क्या उस अनुपस्थिति की भरपाई कर सकते हैं? श्राद्ध की आत्मा श्रद्धा है और श्रद्धा का पहला प्रमाण जीवित माता-पिता के प्रति व्यवहार होना चाहिए। मृत्यु के बाद फूल चढ़ाना सुंदर परंपरा हो सकती है, किंतु जीवन रहते हुए प्रेम के दो शब्द, साथ बैठकर भोजन, बीमारी में सेवा, नियमित संवाद और सम्मान कहीं अधिक जीवंत श्रद्धांजलि हैं।

साथियों,यहीं पितृ पक्ष का आध्यात्मिक संदेश आधुनिक सामाजिक विमर्श में असाधारण रूप से प्रासंगिक हो जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपने बुजुर्ग माता-पिता को अकेलेपन,आर्थिक असुरक्षा या अपमान में छोड़कर बाद में भव्य श्राद्ध आयोजित करता है,तो समाज कोकर्मकांड के साथ उसके मूल उद्देश्य पर भी विचार करना चाहिए। इसका अर्थ धार्मिक अनुष्ठानों को कमतर आंकना नहीं है; बल्कि उनके भीतर निहित कर्तव्य, सेवा और कृतज्ञता को व्यवहार में उतारना है ।जिस पिता ने अपनी आवश्यकताओं को सीमित करके संतान की शिक्षा पर खर्च किया, जिस मां ने अपना सुख त्यागकर बच्चों का भविष्य बनाया,उनके वृद्ध होने पर उन्हें बोझ समझना केवल पारिवारिक विफलता नहीं,बल्कि सामाजिक मूल्यों के क्षरण का संकेत है ।विदेश या दूसरे शहर में रहना उपेक्षा का पर्याय नहीं होना चाहिए ।आज वीडियो संवाद,तत्काल धन हस्तांतरण, स्वास्थ्य निगरानी और अनेक डिजिटल सुविधाएं उपलब्ध हैं;अर्थात वही तकनीक जिसे दूरी का कारण माना जाता है, सही उपयोग से माता-पिता के साथ संबंध मजबूत करने का माध्यम भी सटीकता से बन सकती है।

साथियों, हिंदू धार्मिक परंपरा में पितृ पक्ष केवल कर्मकांड का समय नहीं,बल्कि अपनी जड़ों की ओर लौटने, अपने अस्तित्व में पूर्वजों के योगदान को स्वीकार करने और अगली पीढ़ी तक कृतज्ञता के संस्कार पहुंचाने का अवसर है ।धार्मिक मान्यता है कि इस अवधि में पितर सूक्ष्म रूप से अपने वंशजों के निकट आते हैं और श्रद्धापूर्वक किए गए तर्पण, पिंडदान, अन्नदान तथा श्राद्ध को स्वीकार कर आशीर्वाद देते हैं। इसे वैज्ञानिक तथ्य के बजाय धार्मिक आस्था और परंपरा के रूप में समझना उचित है। किंतु इसके पीछे छिपा सामाजिक और दार्शनिक संदेश सार्वभौमिक है,मनुष्य अकेला नहीं बनता; उसके वर्तमान के पीछे माता-पिता और अनेक पीढ़ियों का त्याग,परिश्रम, संस्कार और संघर्ष खड़ा होता है। यही कारण है कि पूर्वज- स्मरण की परंपराएं केवल भारत तक सीमित नहीं हैं ।दुनियाँ की अनेक संस्कृतियों में अलग-अलग रूपों में दिवंगत पूर्वजों को स्मरण करने, उनकी कब्रों या स्मृति-स्थलों पर जाने और परिवार के साथ उनकी स्मृतियां साझा करने की परंपराएं मिलती हैं। इसलिए पितृ पक्ष को भारतीय संस्कृति के साथ-साथ मानवीय कृतज्ञता के व्यापक दर्शन के रूप में भी सटीकता से देखा जा सकता है।

साथियों,भारत में बुजुर्गों के अधिकारों को केवल नैतिकता के भरोसे नहीं छोड़ा गया है। माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण- पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007 जैसी कानूनी व्यवस्था संतान और रिश्तेदारों की जिम्मेदारियों के प्रश्न को विधिक आयाम भी देती है। लेकिन प्रत्येक पारिवारिक संबंध को कानून के सहारे जीवित नहीं रखा जा सकता। अदालत आर्थिक भरण- पोषण का आदेश दे सकती है, परंतु माता के अकेलेपन को पुत्र के स्नेह में और पिता की प्रतीक्षा को बेटी के संवाद में परिवर्तित करने का आदेश कोई कानून नहीं दे सकता। उसके लिए संस्कारों की सामाजिक पुनजार्गृति आवश्यक है ।विद्यालयों, परिवारों, धार्मिक-सामाजिक संस्थाओं और जनसंचार माध्यमों को मिलकर ऐसी चेतना विकसित करनी होगी जिसमें बच्चों को सफलता का अर्थ केवल उच्च वेतन, बड़ा पद और विदेश में नौकरी नहीं, बल्कि उन हाथों का सम्मान करना भी सिखाया जाए जिन्होंने उन्हें वहां तक पहुंचाया है।

साथियों,आज आवश्यकता किसी हिंसक अथवा टकराव पूर्ण क्रांति की नहीं, बल्कि संवेदनाओं की विराट सामाजिक क्रांति की है,ऐसी क्रांति जिसमें पितृ पक्ष के सोलह दिनों की श्रद्धा वर्ष के शेष दिनों में भी माता-पिता की सेवा में दिखाई दे ।परिवार सप्ताह में कम-से-कम कुछ निश्चित समय बुजुर्गों के साथ संवाद के लिए निर्धारित करें; दूर रहने वाली संतान नियमित संपर्क रखे; स्वास्थ्य, आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक सहभागिता की जिम्मेदारी साझा की जाए; बच्चों को दादा-दादी और नाना-नानी के जीवन-संघर्ष की कहानियां सुनाई जाएं। इससे पीढ़ियों के बीच केवल संबंध नहीं, बल्कि अनुभव और संस्कारों का हस्तांतरण भी होगा। डिजिटल युग को दोष देने के बजाय डिजिटल साधनों को पीढ़ियों को जोड़ने वाला सेतु बनाना आज की वास्तविक आवश्यकता है।

अतः 27 सितंबर से 10 अक्टूबर 2026 तक का पितृ पक्ष हमारे सामने केवल पूर्वजों का श्राद्ध करने का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का दर्पण लेकर आ रहा है। प्रश्न यह नहीं कि हमने पितरों के लिए कितने दीप जलाए, कितने लोगों को भोजन कराया अथवा कितना बड़ा अनुष्ठान किया; बड़ा प्रश्न यह है कि जब हमारे माता-पिता हमारे सामने थे, तब हमने उनके जीवन में कितनी रोशनी भरी? पितृ पक्ष की सार्थकता तभी पूर्ण होगी जब मृत्यु के बाद श्राद्ध के साथ जीवन रहते सेवा हमारी पारिवारिक संस्कृति का अटूट सिद्धांत बने। शायद आधुनिक भारत के लिए पितृ पक्ष का सबसे बड़ा संदेश यही है,श्राद्ध से पहले श्रद्धा, कर्मकांड से पहले कर्तव्य और मृत्यु के बाद सम्मान से पहले जीवन रहते माता-पिता का मान- सम्मान।

पितरों के प्रति कर्तव्य : स्मृति से संस्कार

सत्यभूषण शर्मा

मनुष्य कितना भी आधुनिक क्यों न हो जाए, उसकी जड़ें अपने परिवार, समाज, संस्कृति और पूर्वजों से जुड़ी रहती हैं। वर्तमान का व्यक्तित्व अतीत की अनेक पीढ़ियों के अनुभव, संघर्ष, संस्कार और त्याग से निर्मित होता है। हम जिस परिवार, नाम, संस्कार और सामाजिक पहचान के साथ जीवन जीते हैं, उसके पीछे हमारे माता-पिता और पूर्वजों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए पितरों का स्मरण केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व की जड़ों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

भारतीय संस्कृति में पितृ-स्मरण की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान जैसे धार्मिक कर्मों के माध्यम से पूर्वजों के प्रति श्रद्धा व्यक्त की जाती है। इन परंपराओं का बाहरी स्वरूप चाहे धार्मिक हो, लेकिन उनका मूल भाव स्मरण, कृतज्ञता, श्रद्धा और अपने पूर्वजों के प्रति ऋण स्वीकार करने में निहित है। यह भाव मनुष्य को अहंकार से दूर करता है और उसे यह याद दिलाता है कि जीवन की यात्रा में वह अकेला नहीं है। हमारे पूर्वजों ने अपने समय की परिस्थितियों में संघर्ष किया, परिवार को संभाला, अभावों से जूझे और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर जीवन की नींव रखी। उनकी सबसे बड़ी विरासत केवल जमीन-जायदाद या भौतिक संपत्ति नहीं थी। उनका वास्तविक धन था—ईमानदारी, परिश्रम, त्याग, अनुशासन, सहनशीलता, करुणा और परिवार के प्रति जिम्मेदारी। इसीलिए पितरों के प्रति कर्तव्य को केवल कर्मकांड तक सीमित करना उचित नहीं होगा। यदि हम श्रद्धा से उनका स्मरण करते हैं, तो उनके श्रेष्ठ मूल्यों को अपने जीवन में अपनाना भी हमारी जिम्मेदारी है।

जीवित माता-पिता की सेवा सबसे बड़ी श्रद्धांजलि

पितृ-स्मरण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि हम अपने जीवित माता-पिता और बुजुर्गों के प्रति कितने संवेदनशील हैं। किसी दिवंगत पूर्वज के लिए श्रद्धा व्यक्त करना महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन उसी परिवार में जीवित माता-पिता अकेलेपन, उपेक्षा या भावनात्मक दूरी का अनुभव करें, तो हमें अपने व्यवहार पर भी विचार करना चाहिए। आज संयुक्त परिवारों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। रोजगार, शिक्षा और बेहतर अवसरों की तलाश में परिवार अलग-अलग शहरों और देशों में बस रहे हैं। इसका एक सकारात्मक पक्ष है कि लोगों को नए अवसर मिलते हैं, लेकिन दूसरी ओर बुजुर्गों के अकेलेपन की समस्या भी सामने आती है। कई बार उनके पास आर्थिक सुविधाएँ होती हैं, परंतु भावनात्मक साथ नहीं होता। बुजुर्गों को सबसे अधिक आवश्यकता सम्मान, संवाद और अपनत्व की होती है। उनके साथ कुछ समय बैठना, उनकी बात ध्यान से सुनना, उनके अनुभवों का सम्मान करना और आवश्यकता पड़ने पर उनका सहारा बनना किसी भी धार्मिक अनुष्ठान से कम महत्वपूर्ण नहीं है। जिस घर में जीवित माता-पिता सम्मानित होते हैं, वही घर वास्तव में पितृ-संस्कारों का सम्मान करता है।

पितृ-ऋण चुकाने का अर्थ क्या है?

पितृ-ऋण कोई ऐसा ऋण नहीं जिसे धन से चुकाया जा सके। यह एक भावनात्मक और नैतिक जिम्मेदारी है। इसे चुकाने का अर्थ है—पूर्वजों से मिले अच्छे संस्कारों को आगे बढ़ाना और परिवार तथा समाज के प्रति अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करना। यदि हमारे पूर्वजों ने कठिन परिस्थितियों में शिक्षा को महत्व दिया, तो हमें अगली पीढ़ी की शिक्षा के लिए गंभीर होना चाहिए। यदि उन्होंने जरूरतमंदों की मदद की, तो हमें भी अपनी क्षमता के अनुसार किसी जरूरतमंद का सहारा बनना चाहिए। यदि उन्होंने ईमानदारी से जीवन जिया, तो हमें भी कठिन परिस्थितियों में ईमानदारी का रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए। इस तरह पितरों की स्मृति हमारे आचरण में दिखाई देने लगती है।

नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ना होगा

आज बच्चों और युवाओं का अधिकांश समय डिजिटल संसार में बीत रहा है। उन्हें विश्व की जानकारी तो तत्काल मिल जाती है, लेकिन कभी-कभी अपने ही परिवार के इतिहास और पूर्वजों के जीवन-संघर्ष से वे अनजान रह जाते हैं। यह परिवार की जिम्मेदारी है कि नई पीढ़ी को बताया जाए कि उनके दादा-दादी, नाना-नानी और अन्य पूर्वजों ने किस प्रकार जीवन जिया। उनके संघर्षों और उपलब्धियों की कहानियाँ बच्चों में आत्मविश्वास, कृतज्ञता और संस्कार पैदा कर सकती हैं। परिवार के बुजुर्गों के संस्मरण सुनना, पुरानी तस्वीरों को सुरक्षित रखना और परिवार की सकारात्मक परंपराओं को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना भी पितृ-स्मरण का एक सुंदर रूप हो सकता है। आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों को काट देना नहीं है। वास्तविक आधुनिकता वही है जो विज्ञान और तकनीक के साथ संवेदना, संस्कार और मानवीय मूल्यों को भी साथ लेकर चले।

श्रद्धा से सेवा तक

पितरों के प्रति श्रद्धा का दायरा परिवार से आगे समाज तक भी बढ़ सकता है। यदि किसी पूर्वज की स्मृति में हम किसी जरूरतमंद विद्यार्थी की फीस में सहयोग करें, किसी बुजुर्ग की सहायता करें, किसी भूखे को भोजन कराएँ या किसी पीड़ित व्यक्ति के जीवन में राहत पहुँचाएँ, तो हमारी श्रद्धा सामाजिक संवेदना का रूप ले सकती है। यही वह बिंदु है जहाँ धार्मिक परंपरा मानवीय जिम्मेदारी से जुड़ती है। कर्मकांड व्यक्ति की आस्था का विषय हो सकता है, लेकिन सेवा, करुणा और सदाचार सार्वभौमिक मानवीय मूल्य हैं। पितृ-स्मरण हमें यह अवसर देता है कि हम अपने अतीत को याद करते हुए वर्तमान को बेहतर बनाएँ और भविष्य को संस्कारित करें।

सच्ची श्रद्धांजलि व्यवहार में दिखाई देती है

पूर्वजों की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करना श्रद्धा का प्रतीक है, लेकिन उनके आदर्शों को जीवन में उतारना श्रद्धा की वास्तविक अभिव्यक्ति है। उनकी स्मृति में एक दिन भावुक होना सरल है; उनके मूल्यों के अनुसार पूरे वर्ष जीवन जीना कहीं अधिक कठिन और सार्थक है। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने माता-पिता और बुजुर्गों का सम्मान करेंगे, परिवार में संवाद और अपनत्व बनाए रखेंगे, अपने बच्चों को संस्कार देंगे और पूर्वजों से मिली श्रेष्ठ परंपराओं को आगे बढ़ाएँगे। पितरों के प्रति हमारा कर्तव्य केवल अतीत को याद करना नहीं, बल्कि उस अतीत से मिले प्रकाश में वर्तमान को सही दिशा देना है। पितरों को सच्ची श्रद्धांजलि दीप जलाने से आगे बढ़कर जीवन में उजाला पैदा करने में है। श्रद्धा जब सेवा से जुड़ती है, स्मृति जब संस्कार बनती है और परंपरा जब मानवता से जुड़ती है, तभी पितृ-स्मरण अपने वास्तविक अर्थ को प्राप्त करता है। हमारे पितर आज भले ही हमारे बीच भौतिक रूप से उपस्थित न हों, लेकिन उनके संस्कार हमारे व्यवहार में, उनके आदर्श हमारे निर्णयों में और उनकी स्मृतियाँ हमारी चेतना में जीवित रह सकती हैं। यही उनकी सबसे बड़ी विरासत है और यही हमारे लिए सबसे बड़ा कर्तव्य—पितरों के प्रति।

सामाजिक व्यक्तित्व और कृतित्व समाज के प्रहरी रहे रामलाल बरिहा

"विंध्यवासिनी पुत्र रामलाल बरिहा : सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले के एकमात्र आदिवासी साहित्यकार का अवसान"

वरिष्ठ पत्रकार लक्ष्मीनारायण लहरे 'साहिल' सारंगढ़

बिंझवार समाज ही नहीं, पूरे सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले के साहित्यिक और शैक्षणिक जगत ने अपना एक आधार स्तंभ खो दिया है। ग्राम सालर में जन्मे और कनकबीरा को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले, विंध्यवासिनी पुत्र के नाम से विख्यात शिक्षाविद, साहित्यकार और समाज सुधारक रामलाल बरिहा जी का 22 सितम्बर 2026 को निधन हो गया। वे 74 वर्ष के थे। उनके निधन से साहित्य और समाज दोनों में एक ऐसा शून्य बना है जिसे भरना आसान नहीं है।

साधारण परिवार से असाधारण शिखर तक

रामलाल बरिहा का जन्म 07 जनवरी 1952 को सारंगढ़ अंचल के ग्राम सालर में एक साधारण जनजाति बिंझवार परिवार में हुआ था। पिता स्व. भागीरथी बरिहा और माता स्व. श्रीमती जगमती बरिहा ने घोर अभावों में भी उन्हें शिक्षा का संस्कार दिया। सोनाखान के अमर शहीद वीर नारायण सिंह के जीवन से प्रेरित होकर उन्होंने शिक्षा को अपना हथियार बनाया। अंग्रेजी में एम.ए. करने के बाद वे 1973 में शिक्षक बने और 2014 तक 41 वर्षों तक शिक्षा की अलख जगाते रहे।

समाज ने दिया सर्वोच्च सम्मान : प्रदेश उपाध्यक्ष से गुरुदेव तक

रामलाल जी का समाज के प्रति समर्पण देखकर समाज ने भी उन्हें भरपूर सम्मान दिया। उनके संगठनात्मक क्षमता और निष्पक्ष नेतृत्व के कारण समाज ने उन्हें छत्तीसगढ़ प्रदेश स्तर पर बिंझवार समाज का उपाध्यक्ष बनाया। यह पद केवल पद नहीं था, बल्कि पूरे प्रदेश के समाज ने उनके प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया था।

इसके साथ ही वे विंध्यवासिनी मंदिर निर्माणकर्ता के रूप में तो जाने ही जाते हैं, साथ ही उन्होंने समाज में सभापति के रूप में भी लंबे समय तक कार्य का निर्वहन किया। सभापति के रूप में उन्होंने समाज के कई जटिल विवादों को सुलझाया, सामाजिक न्याय की स्थापना की और समाज को अनुशासन सिखाया। उनके फैसले को सभी स्वीकार करते थे क्योंकि उसमें निष्पक्षता और अनुभव होता था। आज यही कारण है कि आज पूरा समाज उन्हें गुरुदेव के रूप में सम्मान करता है। बिंझवार समाज के बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक के मुंह पर उनके लिए एक ही शब्द है - गुरुदेव। यह उपाधि उन्हें किसी विश्वविद्यालय ने नहीं, बल्कि समाज ने दी है। यह सम्मान किसी भी उपाधि से बड़ा है।

जिले के एकमात्र आदिवासी साहित्यकार

रामलाल बरिहा जी की एक और ऐतिहासिक पहचान यह है कि वे सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले के एकमात्र ऐसे आदिवासी साहित्यकार थे, जिनकी कृति पर विश्वविद्यालय स्तर पर शोध कार्य हुआ। उनकी कालजयी कृति "विंध्यवासिनी पुत्र बिंझवार" (2016) ने बिंझवार समाज को पहली बार लिखित इतिहास, संस्कृति और अस्मिता दी। यह पुस्तक समाज का गौरव-ग्रंथ बन चुकी है।

थीसिस में शामिल हुई कृति, ढँऊमें हुआ मूल्यांकन

उनके साहित्यिक अवदान को अकादमिक मान्यता भी मिली। शिक्षाविद डॉ. पुष्पा बरिहा कहती हैं - "मैंने अपनी ढँऊथीसिस में बरिहा जी की कृति 'विंध्यवासिनी पुत्र बिंझवार' को शामिल किया है। यानि इनकी रचना पर पीएचडी हो चुकी है।"

डॉ. पुष्पा बरिहा की थीसिस का विषय है - "सारंगढ़ बिलाईगढ़ अंचल के रचित निबंध साहित्य में डॉ. गौतमसिंह पटेल की साहित्यिक रचनाओं का मूल्यांकन परक अध्ययन"। इस महत्वपूर्ण शोध-ग्रंथ में उन्होंने रामलाल बरिहा जी के साहित्य को भी एक स्वतंत्र अध्याय के रूप में शामिल कर उनके शिक्षाविद और साहित्यकार व्यक्तित्व का गहन मूल्यांकन किया है। डॉ. पुष्पा बरिहा के अनुसार, उनका साहित्य केवल साहित्य नहीं, बल्कि समाजशास्त्र है।

कनकबीरा में आस्था से एकता का सूत्र

साहित्य के साथ-साथ उन्होंने आस्था के माध्यम से भी समाज को जोड़ा। सारंगढ़ मुख्यालय के समीप ग्राम कनकबीरा में उन्होंने अपनी कुलदेवी माँ विंध्यवासिनी का भव्य मंदिर निर्माण कराया। आज वह मंदिर बिंझवार समाज के सामाजिक एकता का महाकुंभ है। इस पुनीत कार्य में उनके छोटे पुत्र आनंद बरिहा ने कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया।

अंत तक समाज के लिए समर्पित

जीवन के अंतिम वर्षों में वे लकवा ग्रस्त हो गए थे। शरीर शिथिल हो गया था, लेकिन मन कभी थका नहीं। चारपाई पर लेटे-लेटे भी वे युवाओं को एकता का उपदेश देते रहते थे। एक शिक्षक, एक प्रदेश उपाध्यक्ष, एक सभापति, एक मंदिर निमार्ता, एक ऐसा साहित्यकार जिसके साहित्य पर ढँऊहुई और जिसे आज पूरा समाज गुरुदेव कहता है - ऐसा बहुआयामी व्यक्तित्व बार-बार जन्म नहीं लेता।

विंध्यवासिनी पुत्र, गुरुदेव रामलाल बरिहा जी को शत-शत नमन।

खास खबर

छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट पहचान दिलाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध –राजेश अग्रवाल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

विश्व पर्यटन दिवस पर 'सेंट्रल इंडिया कनेक्ट छत्तीसगढ़ मार्केट प्लेस-2026' का हुआ आयोजन

विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल एवं छत्तीसगढ़ ट्रैवल ट्रेड एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में सेंट्रल इंडिया कनेक्ट छत्तीसगढ़ मार्केट प्लेस-2026 का आयोजन मेफेयर लेक व्यू रिसॉर्ट, नवा रायपुर में किया गया। आयोजन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों को देश-विदेश के पर्यटन बाजार से जोड़ना, पर्यटन कारोबार को बढ़ावा देना तथा प्रदेश में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए पर्यटन उद्योग से जुड़े विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाना था। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ सहित विभिन्न राज्यों, विशेषकर पड़ोसी राज्यों के टूर ऑपरेटर्स, ट्रैवल एजेंट्स, होटलियर्स, होम-स्टे संचालकों तथा विदेशी टूर एजेंसियों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के अध्यक्ष नीलू शर्मा ने की। इस अवसर पर पर्यटन विभाग के सचिव डॉ. एस. भारतीदासन, छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के प्रबंध संचालक सौमिल रंजन चौबे, एलियांज इंडिया एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीप भगत, छत्तीसगढ़ ट्रैवल ट्रेड एसोसिएशन के अध्यक्ष जसप्रीत भाटिया, कपिल जैन, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही कलेक्टर विजय दयाराम के., होटल मेफेयर के जीएम नीलेश, जिला पंचायत जीपीएम के सीईओ मुकेश रावटे सहित पर्यटन उद्योग से जुड़े प्रतिनिधि, मीडिया प्रतिनिधि एवं पर्यटन मंडल के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

पर्यटन को रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था से जोड़ने पर जोर

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि पर्यटन केवल घूमने-फिरने का माध्यम नहीं, बल्कि प्रकृति, संस्कृति, इतिहास, विरासत और स्थानीय अर्थव्यवस्था को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण क्षेत्र है। छत्तीसगढ़ के पास बस्तर की जीवंत जनजातीय संस्कृति, सरगुजा की प्राकृतिक सुंदरता, चित्रकोट और तीरथगढ़ जैसे जलप्रपात, सिरपुर की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक विरासत, राजिम की धार्मिक आस्था, भोरमदेव की स्थापत्य कला और बारनवापारा का वन्यजीवन जैसी विविध पर्यटन संपदाएं हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में राज्य सरकार छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट पहचान दिलाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है। पर्यटन विकास का उद्देश्य केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार, महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, कारीगरों एवं कलाकारों के लिए बाजार तथा ग्रामीण एवं जनजातीय समुदायों के लिए आजीविका के नए अवसर तैयार करना भी है।

श्री अग्रवाल ने कहा कि सेंट्रल इंडिया कनेक्ट छत्तीसगढ़ मार्केट प्लेस पर्यटन कारोबारियों को देश-विदेश के पर्यटन बाजार से जोड़ने का महत्वपूर्ण मंच है। इससे व्यावसायिक साझेदारी बढ़ाने, नए पर्यटन बाजारों से जुड़ने, नए टूर पैकेज विकसित करने तथा छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों को अधिक से अधिक पर्यटकों तक पहुंचाने में सहायता मिलेगी। उन्होंने रायपुर में निमार्णाधीन फिल्म सिटी, भोरमदेव कॉरिडोर और जशपुर के मयाली क्षेत्र में पर्यटन विकास जैसी परियोजनाओं का भी उल्लेख किया।

पर्यटन मंडल अध्यक्ष ने बताया आयोजन का उद्देश्य

छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के अध्यक्ष नीलू शर्मा ने कहा कि यह आयोजन

केवल उत्सव या औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ के पर्यटन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण प्रयास है। देश-विदेश के पर्यटन कारोबारियों और विभिन्न हितधारकों को एक मंच पर लाकर व्यावसायिक संबंधों को मजबूत करने तथा छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ट्रैवल एजेंट्स और टूर ऑपरेटर्स पर्यटन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बीटूबी बैठक के माध्यम से नए पर्यटन पैकेज तैयार करने और व्यावसायिक साझेदारी विकसित करने के अवसर मिले हैं। उन्होंने ट्रैवल एजेंट्स से छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों को अपने टूर पैकेज में शामिल करने और प्रदेश की पर्यटन संभावनाओं को देश-दुनिया तक पहुंचाने में सहयोग करने का आह्वान किया।

400 से अधिक ट्रैवल एजेंसियां पर्यटन मंडल से जुड़ीं

नीलू शर्मा ने बताया कि दिल्ली, भुवनेश्वर, पुणे और चेन्नई जैसे प्रमुख शहरों में रोड शो एवं विभिन्न राष्ट्रीय पर्यटन आयोजनों में सहभागिता के माध्यम से छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक सुंदरता, संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर और पर्यटन सुविधाओं का प्रचार-प्रसार किया गया है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप 400 से अधिक ट्रैवल एजेंसियां छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल से जुड़ चुकी हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में इस नेटवर्क को और विस्तारित किया जाएगा।

पर्यटन क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों का सम्मान

कार्यक्रम में पर्यटन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले पर्यटन हितधारकों को राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए गए। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। बेस्ट टूरिज्म डिस्ट्रिक्ट प्रमोशन अवार्ड गौरेला-पेंड्रा-मरवाही को, बेस्ट इको टूरिज्म साइट अवार्ड तक्षक भोरमदेव को, बेस्ट होटल अवार्ड एम्बिशन जगदलपुर को, बेस्ट टूर ऑपरेटर अवार्ड डी. रमेश कैंप वन्स को, बेस्ट टूरिज्म स्टार्टअप अवार्ड हेरिटेज वाला के शिवम त्रिवेदी को, बेस्ट एडवेंचर टूर ऑपरेटर अवार्ड ट्रिपी हिल्स, जशपुर के सौरभ सिंह को तथा बेस्ट होम-स्टे अवार्ड धुरवा डेरा के मानसिंह को प्रदान किया गया। इसी क्रम में बेस्ट इन्फ्लुएंसर का पुरस्कार अनुपम सिन्हा को, बेस्ट टूरिस्ट इन्फॉर्मेशन सेंटर/स्टार परफॉर्मर सीटीबी का पुरस्कार डोंगरगढ़ के श्रीनिवास राव एवं टीम तथा बेस्ट स्टार परफॉर्मर रिसोर्ट सीटीबी का पुरस्कार इको हरेली रिसॉर्ट, बारनवापारा के सुभाष ठाकुर एवं टीम को प्रदान किया गया। सभी पुरस्कारों के अंतर्गत 11,000 की राशि का चेक, मोमेंटो एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम के दौरान पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल द्वारा गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले के पुरातात्विक स्थलों पर आधारित कॉफी टेबल बुक का विमोचन भी किया गया।

विश्व पर्यटन दिवस : जहाँ प्रकृति पुकारती है, वहाँ धमतरी आपका इंतजार कर रहा है

गंगरेल के द्वीप से आकार ले रही धमतरी के अनुभव आधारित पर्यटन की नई पहचान

शशिरत्न पाराशर, उप संचालक / धमतरी

कल्पना कीजिए—चारों ओर शांत जलराशि, दूर तक फैली हरियाली, खुले आसमान से झांकती सुनहरी धूप, ठंडी हवा का स्पर्श और शहर की भागदौड़ से दूर प्रकृति के बीच बिताए कुछ सुकून भरे पल। नाव धीरे-धीरे जल को चीरते हुए आगे बढ़ती है और लगभग 40 मिनट बाद सामने उभरता है एक खूबसूरत द्वीप। यहां पहुंचते ही महसूस होता है कि यात्रा केवल किसी स्थान तक पहुंचने की नहीं, बल्कि प्रकृति के और करीब आने की है। सेवा यह है गंगरेल का द्वीप, जो अब धमतरी के पर्यटन मानचित्र पर अनुभव आधारित पर्यटन की नई कहानी लिखने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

हर वर्ष 27 सितंबर को मनाया जाने वाला विश्व पर्यटन दिवस पर्यटन के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व को रेखांकित करता है। वर्ष 2026 की थीम डिजिटल एजेंडा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा पर्यटन का पुनर्गठन पर्यटन के बदलते स्वरूप की ओर संकेत करती है। आज का पर्यटक केवल किसी स्थान को देखना नहीं चाहता, वह उसे महसूस करना, उसके साथ जुड़ना और एक यादगार अनुभव लेकर लौटना चाहता है। धमतरी इसी नई पर्यटन अवधारणा के अनुरूप प्रकृति, रोमांच, संस्कृति और स्थानीय समुदाय को एक साथ जोड़ने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

द्वीप तक पहुंचने वाली लगभग 40 मिनट की बोट यात्रा ही इस अनुभव की पहली रोमांचक कड़ी बनी। इसके बाद शुरू हुआ प्रकृति के बीच ठहरने, घूमने और उसे महसूस करने का सिलसिला। नाइट कैंपिंग, ट्रेकिंग, फिशिंग, स्विमिंग, बोनफायर, आउटडोर कुकिंग, बर्ड वॉचिंग और स्टार गेजिंग जैसी गतिविधियों ने इस यात्रा को सामान्य भ्रमण से अलग एक विशिष्ट अनुभव में बदल दिया। रात के शांत जलक्षेत्र के बीच कैंप में ठहरना, खुले आसमान के नीचे तारों को निहारना और प्रकृति की खामोशी को महसूस करना—ऐसे अनुभव पर्यटक को केवल किसी स्थान की तस्वीर नहीं देते, बल्कि उसकी स्मृतियों में एक कहानी छोड़ जाते हैं।

पर्यटन बने स्थानीय समृद्धि का माध्यम

पर्यटन का वास्तविक प्रभाव तब दिखाई देता है, जब उसका लाभ स्थानीय समुदाय तक पहुंचे। गंगरेल जैसे क्षेत्रों में बोटिंग, स्थानीय गाइड, कैंप प्रबंधन, आतिथ्य, भोजन व्यवस्था, ट्रेकिंग, हस्तशिल्प, स्थानीय उत्पादों और अन्य पर्यटन सेवाओं में स्थानीय युवाओं तथा महिला समूहों की भागीदारी रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसरों का आधार बन सकती है। स्थानीय व्यंजन पर्यटक के लिए स्वाद का अनुभव बन सकते हैं, स्थानीय हस्तशिल्प स्मृति का हिस्सा बन सकते हैं और गांवों की जीवनशैली स्वयं एक पर्यटन अनुभव बन सकती है। इस प्रकार पर्यटन किसी स्थल की अर्थव्यवस्था को ही नहीं, बल्कि स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को भी नई पहचान देने का माध्यम बनता है।

धमतरी–जहां हर अनुभव की अपनी कहानी है

गंगरेल का द्वीप धमतरी की पर्यटन संभावनाओं की केवल एक झलक है। जिले में पर्यटन की विविधता इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

गंगरेल एडवेंचर स्पोर्ट्स रोमांच और जल पर्यटन का अनुभव देते हैं, तो ढेमली आइलैंड द्वीप पर्यटन की नई संभावनाओं को सामने लाता है। नरहरा वाटरफॉल प्रकृति और ट्रेकिंग के आकर्षण से जोड़ता है। महानदी का उद्गम सिहावा आध्यात्मिकता, प्रकृति और विरासत का अद्भुत संगम है। रूद्री कॉरिडोर और कायकिंग महानदी के तटवर्ती अनुभवों को नया स्वरूप दे रहे हैं। वहीं हरफर, मेचका और जबर्रा जैसे क्षेत्र सामुदायिक एवं इको-टूरिज्म की संभावनाओं को सामने लाते हैं। निरई माता श्रद्धा और प्रकृति के अनूठे समन्वय का अनुभव कराती है। इन सभी स्थलों को एक व्यापक पर्यटन परिपथ से जोड़ने पर धमतरी में ऐसा पर्यटन अनुभव विकसित किया जा सकता है, जिसमें पर्यटक एक ही यात्रा में जल, जंगल, रोमांच, आस्था, संस्कृति और ग्रामीण जीवन को महसूस कर सके।

जिम्मेदार पर्यटन–प्रकृति के साथ विकास

धमतरी की पर्यटन विकास यात्रा का आधार केवल अधिक पर्यटकों को आकर्षित करना नहीं, बल्कि जिम्मेदार और टिकाऊ पर्यटन को बढ़ावा देना है। प्राकृतिक स्थलों पर स्वच्छता, सुरक्षा, जैव विविधता संरक्षण, जल संरक्षण और स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी को प्राथमिकता देकर पर्यटन विकास को प्रकृति के अनुरूप आगे बढ़ाया जा सकता है। गंगरेल का द्वीप इसी संतुलन की संभावनाओं को सामने रखता है—जहां रोमांच हो, लेकिन प्रकृति की गरिमा के साथ; जहां पर्यटन हो, लेकिन स्थानीय समुदाय की भागीदारी के साथ; जहां आधुनिक सुविधाएं हों, लेकिन प्राकृतिक परिवेश की मौलिकता बनी रहे।

धमतरी केवल देखने की जगह नहीं है–यह महसूस करने की जगह है।

गंगरेल के द्वीप से लेकर सिहावा की पहाड़ियों तक, महानदी के तट से लेकर जलप्रपातों और ग्रामीण अंचलों तक—धमतरी छत्तीसगढ़ के पर्यटन मानचित्र पर प्रकृति, रोमांच, आस्था, संस्कृति और समुदाय के समन्वय की एक नई कहानी लिख रहा है। इस विश्व पर्यटन दिवस पर आइए, धमतरी को केवल घूमें नहींङ्क उसे महसूस करें। क्योंकि यहां हर रास्ता एक अनुभव की ओर जाता है और हर अनुभव एक ऐसी स्मृति बन जाता है, जो लौटने के बाद भी दिल में बसती है।

डिजिटल युग में धमतरी की नई पर्यटन पहचान

विश्व पर्यटन दिवस 2026 की थीम डिजिटल तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की ओर भी ध्यान आकर्षित करती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, वर्चुअल अनुभव, स्मार्ट यात्रा योजना, डिजिटल मैपिंग और पर्यटक सुविधाओं की ऑनलाइन जानकारी के माध्यम से धमतरी के पर्यटन स्थलों को देश-दुनिया के पर्यटकों तक पहुंचाने की व्यापक संभावनाएं हैं।

आज किसी पर्यटन स्थल की पहचान केवल उसके प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं, बल्कि उस सौंदर्य को दुनिया तक पहुंचाने की क्षमता से भी बनती है। धमतरी के पास प्रकृति का वैभव है; आवश्यकता है उसे आधुनिक तकनीक, बेहतर सुविधाओं और प्रभावी प्रचार-प्रसार से जोड़ने की।

धमतरी—एक यात्रा नहीं, एक अनुभव

गंगरेल का द्वीप आज एक नई शुरूआत का प्रतीक है। यह उस धमतरी की तस्वीर प्रस्तुत करता है, जहां पर्यटन केवल घूमने का माध्यम नहीं, बल्कि प्रकृति से जुड़ने, रोमांच को महसूस करने, संस्कृति को जानने और स्थानीय जीवन के साथ संवाद करने का अवसर बन रहा है।

जहां सुबह की पहली किरण जलराशि पर सुनहरी तस्वीर बनाती है और शाम का आसमान पूरे परिवेश को एक अलग रंग दे देता है। जहां नाव की लहरों से शुरू हुआ सफर रात के तारों तक पहुंचता है। जहां प्रकृति की शांति और रोमांच की ऊर्जा साथ-साथ चलती है।

गंगरेल के द्वीप पर रोमांच का नया संसार

गंगरेल जलाशय के विस्तृत जलक्षेत्र के मध्य स्थित द्वीप पर पहली बार आइलैंड कैंपसाइट विकसित किया गया है। यह पहल धमतरी में एडवेंचर, नेचर और कम्युनिटी टूरिज्म की संभावनाओं को एक नया आयाम देती है। 17 एवं 18 सितंबर को टूर ऑपरेटर्स के लिए आयोजित एफएएम ट्रिप **(Familiarization Trip)** के दौरान गंगरेल बांध, जलक्षेत्र, द्वीपों तथा आसपास के प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिवेश का प्रत्यक्ष अनुभव कराया गया। इसके बाद 19 एवं 20 सितंबर को छत्तीसगढ़ की ट्रैवल कंपनी **CampOnce** द्वारा **2 Days–1 Night Island Camping Adventure** आयोजित किया गया। इसमें छत्तीसगढ़ के साथ ओडिशा और तमिलनाडु से आए पर्यटकों ने सहभागिता की। संकल्प अभियान अंतर्गत यह विशेष लेख आप पढ़ रहे है ।

विश्व पर्यटन दिवस

सेवा संकल्प अभियान के तहत पर्यटन समितियों ने दिया स्वच्छ, सुंदर और प्लास्टिक मुक्त पर्यटन का दिया संदेश

जीपीएम जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों में चला वृहद स्वच्छता अभियान

नई दृष्टिबिंदु / जीपीएम

विश्व पर्यटन दिवस एवं सेवा संकल्प अभियान के अवसर पर गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों को स्वच्छ, सुंदर और पर्यावरण अनुकूल बनाए रखने के उद्देश्य से रविवार को वृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया। कलेक्टर विजय दयाराम के. के मार्गदर्शन में जिले की विभिन्न पर्यटन समितियों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों के पर्यटन स्थलों पर विशेष स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की गईं। अभियान के माध्यम से स्वच्छता के साथ पर्यावरण संरक्षण और प्लास्टिक मुक्त पर्यटन का संदेश दिया गया।

अभियान के दौरान पर्यटन स्थलों के परिसरों एवं आसपास के क्षेत्रों में साफ-सफाई की गई। पर्यटन स्थलों पर बिखरे कचरे, प्लास्टिक एवं अन्य अपशिष्ट को एकत्रित कर उचित निपटान की व्यवस्था की गई। पर्यटन समितियों के सदस्यों ने स्थानीय नागरिकों और पर्यटकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए पर्यटन स्थलों पर कचरा नहीं फैलाने, सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग से बचने तथा कचरे का उचित निपटान करने के लिए प्रेरित किया।

प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण का संदेश

स्वच्छता अभियान के दौरान पर्यटन समितियों ने जिले की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण की आवश्यकता पर भी लोगों को जागरूक किया। पर्यटकों से अपील की गई कि वे पर्यटन स्थलों की प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने में सहयोग करें और भ्रमण के दौरान पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार अपनाएं। पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता बनाए रखना केवल प्रशासन या पर्यटन समितियों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक और पर्यटक की सामूहिक जिम्मेदारी है।

कलेक्टर ने की जिलेवासियों से सहभागिता की अपील

कलेक्टर विजय दयाराम के. ने विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर जिलेवासियों से पर्यटन स्थलों की स्वच्छता और प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखने में सक्रिय भागीदारी की अपील की। उन्होंने कहा कि गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिला प्राकृतिक सौंदर्य, हरियाली, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध है। जिले की ये धरोहरें हमारी पहचान हैं और इनका संरक्षण हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि पर्यटन स्थलों को स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनाए रखने से पर्यटकों को बेहतर अनुभव मिलता है और जिले की सकारात्मक पहचान भी मजबूत होती है। उन्होंने नागरिकों एवं पर्यटकों से आग्रह किया कि पर्यटन स्थलों पर प्लास्टिक एवं अन्य कचरा न फैलाएं, सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग से बचें और प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण में सहभागी बनें।

स्वच्छ पर्यटन से बढ़ेंगे रोजगार के अवसर

कलेक्टर विजय दयाराम के. ने कहा कि स्वच्छ और सुव्यवस्थित पर्यटन स्थल जिले में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पर्यटन को बढ़ावा मिलने से स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं आजीविका के नए अवसर भी सृजित होते हैं। स्थानीय समुदाय की सहभागिता से पर्यटन स्थलों का संरक्षण और अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

हमारा पर्यटन स्थलकृहमारी जिम्मेदारी का लिया संकल्प

विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर आयोजित स्वच्छता अभियान में पर्यटन समितियों के सदस्यों ने हमारा पर्यटन स्थलकृहमारी जिम्मेदारी की भावना के साथ जिले के पर्यटन स्थलों को स्वच्छ, सुंदर और प्लास्टिक मुक्त बनाए रखने का संकल्प लिया। उन्होंने नियमित रूप से स्वच्छता गतिविधियों में सहभागिता करने और पर्यटकों एवं स्थानीय लोगों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित यह पहल जिले के पर्यटन स्थलों को स्वच्छ एवं पर्यावरण अनुकूल बनाए रखने के साथ-साथ नागरिकों में जिम्मेदार पर्यटन की भावना विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अभियान के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि पर्यटन स्थलों की सुंदरता और प्राकृतिक विरासत को सुरक्षित रखना सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

जॉब सिक्योरिटी युवाओं को एसएससी जॉब्स की तरफ आकर्षित करती है

अगर आप सरकारी नौकरी की तलाश में हैं, तो कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली जॉब्स के बारे में जानते ही होंगे। इन जॉब्स की कुछ खासियतें इन्हें बेहद आकर्षक बनाती हैं। जानते हैं इन्हीं खासियतों के बारे में।

केंद्र सरकार की नौकरी

परंपरागत रूप से भारत में सरकारी नौकरी को प्रतिष्ठा के साथ जोड़कर देखा जाता रहा है। एसएससी जॉब्स सरकारी नौकरियों में काफी ऊंचा दर्जा रखती हैं, सो इनके साथ भी यह प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। अधिकांश एसएससी जॉब्स उच्च पे-बैंड के तहत आती हैं और इनमें अच्छी-खासी सैलरी मिलती है। इसके अलावा, टैक्स ऑडिटर्स, इंस्पेक्टर्स, असिस्टेंट्स आदि को कई अन्य सुविधाएं भी मिलती हैं, जैसे मुफ्त स्वास्थ्य बीमा, दिल्ली व अन्य प्रमुख नगरों में आवास, अनेक प्रकार के भत्ते आदि।

जॉब सिक्योरिटी

किसी भी फील्ड में लोगों को आकर्षित करने का एक बड़ा कारक होता है जॉब सिक्योरिटी। यूं तो सभी सरकारी नौकरियों में जॉब सिक्योरिटी होती है मगर उच्च श्रेणी का अफसर होने के नाते यह सुरक्षा और भी बढ़ जाती है। प्राइवेट सेक्टर में उच्च पदों पर कार्यरत अफसरों को भी विपरीत परिस्थितियों में पिंक स्लिप थमाए जाने का खतरा रहता है मगर सरकारी क्षेत्र में ऐसा कभी नहीं होता। यह सुरक्षा युवाओं को प्रतिष्ठापूर्ण एसएससी जॉब्स की तरफ आकर्षित करती है।

कई तरह के पद

अनेक युवा यह सोचकर एसएससी जॉब्स से दूर भागते हैं कि यहां तो निम्न श्रेणी के ही पद उपलब्ध होते हैं। उनकी यह सोच गलत है। एसएससी सीजीएल परीक्षा के माध्यम से इनकम टैक्स इंस्पेक्टर, एन्फोर्समेंट ऑफिसर, मिनिस्टीरियल असिस्टेंट आदि जैसे उच्च श्रेणी के पदों पर भी नियुक्तियां की जाती हैं। कुल मिलाकर यहां कई तरह के पदों पर काम किया जा सकता है, जिनमें अच्छे-खासे प्रशासनिक अधिकार भी होते हैं और समाज में सम्मान भी।

प्रिंट, टीवी और रेडियो को अपने अंदर समेटे है वेब पत्रकारिता

वेब पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम जो अपने अंदर प्रिंट, टीवी और रेडियो को समेटे है। मीडिया का लोकतंत्रीकरण करने में वेब पत्रकारिता बड़ी भूमिका निभा रहा है। संचार माध्यम के रूप में इस प्लेटफार्म ने हर आदमी का आवाज बुलंद कर हजारों-करोड़ो लोगो तक पहुंचाया है। सूचना और संचार क्रांति के दौर में आज प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया के बीच वेब पत्रकारिता का चलन तेजी से बढ़ा है और अपनी पहचान बना ली है। अखबारों की तरह बेव पत्र और पत्रिकाओं का जाल, अंतरजाल पर पूरी तरह बिछ चुका है। छोटे-बड़े हर शहर से अमूमन बेव पत्रकारिता संचालित हो रही है। छोटे-बड़े सभी शहरों के प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया भी वेब पर हैं। इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत में थोड़े ही समय में इसने बड़ा मुकाम पा लिया है। हालांकि समर अभी शेष है और भविष्य उज्जवल।

वेब पत्रकारिता को पेशा बनाने वालों के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

- हिंदी इनस्क्रिप्ट की बोर्ड की जानकारी हो।
- यूनिकोड फॉंट तकनीकि पर काम करें।
- वेब पत्रकारिता के समाचार सूचनापरक होना चाहिए, वाक्य छोटे होने चाहिए।
- सर्च इंजन का की-वर्ड समाचार में कम से कम दो-तीन बार जरूर लायें।
- कुछ की-वर्ड समाचार के हेड-लाईन में भी जरूर लायें।
- समय का ख्याल रखें- आज, कल और परसो से बचें ।
- संस्था का नाम भी समाचार में जरूर लायें।
- तीसरे या चौथे पेराग्राफ के बाद समाचार का बैक-ग्राउंड दें ।
- तस्वीरें और ग्राफिक से पेज को सजायें।
- संदर्भ और स्रोत का भरपूर उपयोग करें।

क्या होती है वेब पत्रकारिता

जिस प्रकार अखबारों, पत्रिकाओं में खबरों के चयन, संपादन या लेखन होते हैं। यही कार्य यदि इंटरनेट पर किया जाता है तो वेब पत्रकारिता कहलाता है।

खुबियाँ

वेब पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम जो अपने अंदर प्रिंट, टीवी और रेडियो को समेटे है। मीडिया का लोकतंत्रीकरण करने में वेब पत्रकारिता बड़ी भूमिका निभा रहा है। संचार माध्यम के रूप में इस प्लेटफार्म ने हर आदमी का आवाज बुलंद कर हजारों-करोड़ो लोगो तक पहुंचाया है। पहले जहां इंटरनेट कम्प्यूटर तक सीमित था, वहीं नई तकनीकों से लैस मोबाइलों, स्मार्ट फोन और टैब में भी इंटरनेट का चलन बढ़ता जा रहा। किसी भी जगह कहीं भी इंटरनेट का इस्तेमाल किया जा सकता है। यह वेब पत्रकारिता का ही कमाल है कि आप दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर किसी भी भाषा में, किसी भी दिन और किसी भी देश का अखबार या खबरें पढ़ सकते हैं। यह ख़बरों का तीर्व माध्यम के रूप में भी स्वीकारा गया है।

चुनौती और समस्या

पहली बड़ी चुनौती कम्प्यूटर साक्षरता दर की है। दूसरी चुनौती भारत में अभी भी वेब पत्रकारिता की पहुंच अगली पंक्ति में खड़े लोगों तक ही सीमित है। इधर के दिनों में यह मध्यम वर्ग तक

वेब पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम जो अपने अंदर प्रिंट, टीवी और रेडियो को समेटे है। मीडिया का लोकतंत्रीकरण करने में वेब पत्रकारिता बड़ी भूमिका निभा रहा है।

भी आया है। जहां तक अंतिम कतार में खड़े लोगों तक पहुंचने की बात है तो अभी यह कोसों दूर है। हालांकि अंतरजाल मुहैया कराने वाली कंपनियों ने मोबाइल फोन और ग्रामीण क्षेत्रों पर ज्यादा ध्यान दिया है और इंटरनेट अब गांवों तक पहुंच गया है। तीसरी चुनौती पत्रकारों के समक्ष तकनीकी ज्ञान की है। अन्य चुनौती के रूप में वेब पत्रकारिता में सबसे बड़ा सवाल विश्वसनीयता को लेकर भी है। आज लोगों को इतनी जगहों से समाचार मिल रहे हैं कि लोगों के लिए समाचारों की विश्वसनीयता एक बड़ा मुद्दा है। यह वेब पत्रकारिता के लिए भी एक बड़ी चुनौती है।

भविष्य

आज वेब-संस्करण चलाने बाली समाचार-पत्र और पत्रिकाओं की संख्या कम है। भविष्य में हर पत्र-पत्रिका ऑन-लाईन होगी। साथ ही साथ स्वतंत्र न्यूज पोर्टल की संख्या में भी वृद्धि होगी। यह आसार लगाया जा रहा है कि समाचार-पत्र घाटे से बचने के लिए प्रिंट संस्करण बंद कर ऑन-लाईन से अपनी सेवा जारी रखेगा। बात स्पष्ट है कि जिस पत्र का लक्षित समूह उच्च वर्ग है और जिनके पास इंटरनेट आसानी से उपलब्ध है, वह धीरे-धीरे प्रिंट संस्करण बंद कर पूर्ण रूप से ऑन-लाईन हो जायेगा।

विस्तृत दायरा

वेब पत्रकारिता की पहुंच एक निश्चित भौगोलिक सीमा तक नहीं है अपितु इसकी पहुंच वैश्विक है। वेब पत्रकारिता करने वालों का दायरा बहुत बड़ा हो जाता है। उनकी ख़बर एक पल में सारी दुनिया में पहुँच जाती है जो कि अन्य समाचार माध्यमों में संभव नहीं है।

एमबीए के सबसे आकर्षक विकल्पों में से एक एमबीए इन इंटरनेशनल बिजनेस

जब पैकेज की बात आती है, तो एमबीए सबसे आकर्षक विकल्पों में से एक के रूप में सामने आता है। तेज गति से हो रहे विकास और आर्थिक परिदृश्य में आ रहे बदलावों को देखते हुए ऐसे पाठ्यक्रमों की जरूरत महसूस हो रही है, जो विद्यार्थियों को इन बदलते हालात के अनुसार तैयार कर सकें। इसी जरूरत को पूरा करने के लिए एमबीए इन इंटरनेशनल बिजनेस जैसे कोर्स सामने आए हैं। यदि कोई विद्यार्थी मैनेजमेंट में रुचि रखता है और दुनिया भर में घूमने का इरादा भी रखता है, तो उसके लिए यह एक बेहतरीन कोर्स हो सकता है।

क्या है एमबीए इन इंटरनेशनल बिजनेस?

बढ़ते भूमंडलीकरण और अंतरराष्ट्रीय कंपनियों की संख्या में वृद्धि को देखते हुए इंटरनेशनल बिजनेस से जुड़े पाठ्यक्रमों की लोकप्रियता बढ़ी है। अनेक कंपनियां, जो विदेशों में अपना व्यवसाय फैलाना चाहती हैं, ऐसे उम्मीदवारों की तलाश में रहती हैं, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बिजनेस संभालने में कुशल हों और साथ ही किसी बिजनेस के लिए उपयोगी सिद्धांतों व अवधारणाओं से अवगत हों। विदेशों में व्यवसाय फैलाने में कई तरह के जोखिम होते हैं। इसलिए कंपनियां ऐसे उम्मीदवारों को ही पसंद करती हैं, जिन्होंने इंटरनेशनल बिजनेस पढ़ा है। यह कोर्स ग्लोबल स्तर पर मौजूद संसाधनों की समझ विकसित करता है। इसमें यह सिखाया जाता है कि अंतरराष्ट्रीय फर्मों की क्या जरूरतें होती हैं और उपलब्ध संसाधनों का बेहतर से बेहतर इस्तेमाल कैसे किया जाए। करियर के लिहाज से इसमें उपलब्ध अवसर और एमबीए इन इंटरनेशनल बिजनेस की डिग्री वाले उम्मीदवारों को मिलने वाला पैकेज इस फील्ड को बेहद आकर्षक बना देता है। साथ ही इसमें दुनिया के विभिन्न देशों में घूमने और जहां भी अच्छा ऑफर मिले, वहां बस जाने का मौका मिल सकता है। इंटरनेशनल बिजनेस में एमबीए करने के बाद आपके लिए विश्व की सर्वश्रेष्ठ कंपनियों हेतु काम करने के द्वार खुल जाते हैं। आपको अंतरराष्ट्रीय बाजार और आर्थिक परिदृश्य से जुड़ी तमाम जानकारी प्राप्त हो सकती है।

यहां से करें कोर्स

यह कोर्स कराने वाले प्रमुख भारतीय संस्थान हैं - इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड, जेके बिजनेस स्कूल, एशियन स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, एशिया-पैसिफिक स्कूल ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एंटरप्राइज, सिंबायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट आदि। इन भारतीय संस्थानों में प्रवेश पाने के लिए प्रवेश परीक्षा पास करनी होती है। इसके अलावा यह डिग्री कराने वाले प्रमुख विदेशी संस्थान इस प्रकार है - आईएनएसईएडी (सिंगापुर), हारवर्ड बिजनेस स्कूल (अमेरिका), व्हार्टन स्कूल यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिलवेनिया (अमेरिका), लंदन बिजनेस स्कूल (ब्रिटेन) आदि।

कहां मिलेगी जॉब?

एमबीए इन इंटरनेशनल बिजनेस कर चुके उम्मीदवारों को जॉब देने के मामले में अग्रणी भारतीय कंपनियां इस प्रकार है - कॉग्निजेंट, कैपजेमिनी, विप्रो, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, टीसीएस आदि। विदेशी संस्थानों की बात करें तो यहां आपको अच्छे ऑफर मिल सकते हैं- यूएस डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, यूएस डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट, इंटरनेशनल ट्रेड कमिशन, बॉस्टन कंसल्टिंग ग्रुप, वॉलमार्ट, जेपी मॉर्गन, मर्क आदि।

क्या सिविल सर्विसेस आपका पैशन है?

यूपीएससी सिविल सर्विसेज एग्जाम एक ऐसी परीक्षा है, जिसके माध्यम से आईएएस और आईपीएस अधिकारी चुने जाते हैं। लगभग हर विद्यार्थी के मन में यह विचार जरूर आता है कि वह आईएएस अफसर बने। बहुत-से लोग इसकी तैयारी भी करते हैं, लेकिन चुने जाते हैं कुछ ही।

दुनिया के किसी भी काम को करने के लिए परिश्रम की जरूरत होती है, लेकिन इससे भी पहले एक और चीज की जरूरत पड़ती है और वह है आपका पैशन, आपका जुनून। इसीलिए एक बात का बहुत खयाल रखना होगा कि यदि आपमें वह जज्बा नहीं है, यदि आप किसी के कहने मात्र से इस परीक्षा की तैयारी करने जा रहे हैं, तो आप इस परीक्षा के लायक नहीं हैं। कारण यह कि आईएएस परीक्षा की तैयारी बिना पैशन के हो ही नहीं सकती। बेहतर होगा कि आप कोई और फील्ड चुन लें क्योंकि समय बहुत कीमती है और इसे किसी ऐसी जगह नहीं लगाना चाहिए, जहां आपका पैशन न हो।

क्या आप फोकस्ड हैं?

कोई भी कार्य एकाग्रता की मांग करता है। यदि आपमें फोकस्ड होने की क्षमता नहीं है या आपका मन भटकता है, तो आपके लिए इस परीक्षा का चुनाव गलत साबित हो सकता है। अक्सर लोग ऑप्शन लेकर चलते हैं कि अगर आईएएस नहीं तो कोई और एग्जाम सही। इस प्रकार दो नावों पर पैर रखने से अक्सर लोग गिर जाते हैं। इसलिए अच्छा यही होगा कि आप या तो पूरी तरह फोकस्ड होकर यह परीक्षा दें या फिर अपना टारगेट बदल दें।

क्या परिस्थितियां पढ़ाई के अनुकूल हैं?

कहते हैं, पढ़ने वाला कहीं भी पढ़ लेता है, फिर चाहे कितना भी शोर हो या कोई समस्या हो। यह बात सच है। लेकिन अगर टारगेट आईएएस हो, तो आपको समस्या हो सकती है। कारण यह कि इसकी तैयारी के लिए आपको शांत माहौल मिलना चाहिए, जिससे आपका मन न भटके। साथ ही, आपकी परिस्थितियां ऐसी होनी चाहिए जो आपको तैयारी करने के लिए अनुकूल माहौल उपलब्ध कराए।

क्या आप न्यूनतम योग्यता रखते हैं?

आईएएस की परीक्षा के लिए आपके पास न्यूनतम योग्यता होनी ही चाहिए। यानी आपको ग्रेजुएट तो होना ही चाहिए, साथ ही आपमें आईएएस के प्रति समर्पण भी होना चाहिए। यहां न्यूनतम योग्यता से मतलब केवल ग्रेजुएट होना ही नहीं है, बल्कि इसके अलावा भविष्य के एक आईएएस अफसर से जो उम्मीद की जाती है, वह योग्यता भी आपमें होनी चाहिए।

क्या आपको डीप स्टडी में रुचि है?

अगर आप बहुत ज्यादा गहराई से पढ़ाई नहीं कर सकते, तो मान लें कि यह परीक्षा आपके लिए नहीं है। सिविल सर्विसेज एग्जाम में आप कुछ चुनिंदा विषयों और ऊपरी स्तर पर पढ़कर पास हो ही नहीं सकते। आपमें ज्ञान की भूख होनी चाहिए। आप हर विषय को उसकी गहराई में जाकर समझें। ऐसा करने की आपमें इच्छा होनी चाहिए।

क्या आप त्वरित व सही निर्णय लेते हैं?

एक आईएएस ऑफिसर को जिन परिस्थितियों में काम करना होता है, उनमें कई बार त्वरित मगर सही निर्णय लेने होते हैं। यह एक जरूरी गुण है, जो हर आईएएस अधिकारी में होना ही चाहिए। इसलिए पेपर हल करते समय भी सही निर्णय का टेस्ट लिया जाता है। कई सवाल ऐसे होते हैं, जो आपकी इसी क्षमता को परखते हैं। इसीलिए डिसीजन मेकर बनें और जीवन के हर पहलू पर चर्चा करें। लोगों की समस्याएं सुनें और फिर अपनी राय देने की आदत डालें।

क्या आपकी पब्लिक सर्विस में रुचि है?

अगर आप सिर्फ पावर, पैसे या पोस्ट के लिए यह परीक्षा देने जा रहें हैं, तो आपको इस बारे में एक बार फिर सोचना चाहिए। आपमें जनता की सेवा का जज्बा होना चाहिए। एक आईएएस अधिकारी से जनता मदद की उम्मीद करती है और उसकी नियुक्ति भी इसलिए की जाती है, ताकि वह जनता की मदद कर सके। उसे जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करा सके और जरूरत पड़ने पर उसकी बात भी सुने, उसकी परेशानी को समझे।

क्या आपमें धैर्य है?

धैर्य न होना छोटी-सी बात लगती है लेकिन यह बहुत बड़ी बात है। हमारी निजी जिंदगी में तो अक्सर हम धैर्य टूट जाने पर एक-दूसरे को लड़ते-झगड़ते देखते हैं। जहां परीक्षा की तैयारी के लिए धैर्य की जरूरत होती है, वहीं भविष्य के आईएएस अधिकारी से यह अपेक्षा भी की जाती है कि वह विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य न खोए और धैर्य के साथ ही काम करे और निर्णय ले, ताकि उसके सही होने की संभावना भी ज्यादा हो।

जिला कांग्रेस कमेटी ने किया ज्ञानेश कुमार को लेकर विरोध प्रदर्शन

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष आशीष छाबड़ा के नेतृत्व में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निदेर्शानुसार बेमेतरा जिला कांग्रेस कमेटी के द्वारा वोट चोरी के आरोपों की निष्पक्ष एवं स्वतंत्र जांच, मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार की गिरफ्तारी की मांग तथा उनके कार्यकाल में लिए गए निर्णयों एवं मतदाता सूची में हुए बदलावों की स्वतंत्र समीक्षा की मांग को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी बेमेतरा द्वारा जिला कलेक्टोरेट तक विशाल विरोध मार्च निकाला गया तथा हाथों में काली पट्टी बांधकर कांग्रेसजनों ने लोकतांत्रिक तरीके से अपना विरोध दर्ज कराया।

इस दौरान कांग्रेस कार्यकताओं ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा गृह मंत्री अमित शाह का पुतला दहन किया। इस दौरान कांग्रेसकार्यकताओं एवं आम जनता को संबोधित करते हुए पूर्व कैबिनेट मंत्री रविंद्र चौबे ने कहा कि चुनाव आयोग की एक संवैधानिक संस्था है उसका जिस तरह दुरुपयोग भारतीय जनता पार्टी के द्वारा किया गया है और विशेष रूप से मुख्य चुनाव आयुक्त के द्वारा जिस तरीके से चुनाव आयोग को संचालित किया गया है वह बहुत ही दुर्भाग्य जनक है। साथ ही साथ यह भारत के लोकतंत्र के लिए खतरनाक है अगर आज समय रहते इसका विरोध नहीं किया गया तो आने वाले समय में लोकतंत्र को खतरा उत्पन्न हो जाएगा इस दौरान जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष आशीष छाबड़ा ने कहा कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार चुनाव आयोग में बैठकर भाजपा कार्यकर्ता की तरह कार्य कर रहे हैं।

मुख्य चुनाव आयुक्त के द्वारा सीधे-सीधे वोट चोरी करके भाजपा के झोली में डाला जा रहा है हमारे नेता राहुल गांधी हमेशा से ही कहते आए हैं कि चुनाव आयोग ठीक से काम नहीं कर रहा है आखिरकार आज वह बात सबके सामने सच साबित हुई मुख्य चुनाव आयुक्त का यह कारनामा कांग्रेस ने तो पहले ही उजागर कर दिया था किंतु अब स्वतंत्र पत्रकार के द्वारा उजागर किया गया है जो कहीं ना कहीं भाजपा के द्वारा लोकतंत्र को कमजोर करने के लिए किए जा रहे पुख्ता सबूत के रूप में सामने आया है सभा को पूर्व संसदीय सचिव गुरदयाल बंजारे ने भी संबोधित किया कांग्रेस कार्यकताओं ने इस दौरान पुतला दहन कर अपनी मांगों को बुलंद किया इस विरोध प्रदर्शन में छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व कृषि मंत्री माननीय रविंद्र चौबे पूर्व विधायक नवागढ़ गुरदयाल सिंह बंजारे सहित जिला कांग्रेस कमेटी बेमेतरा के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सेवादल, महिला कांग्रेस, किसान कांग्रेस, ब्लॉक एवं शहर कांग्रेस कमेटी, अनुसूचित जाति/जनजाति कांग्रेस, इंटक, खेल प्रकोष्ठ, पिछड़ा वर्ग कांग्रेस, चिकित्सा प्रकोष्ठ, युवा कांग्रेस, एन एस यू आइ, जिला पंचायत एवं जनपद सदस्यगण, पार्षदगण, मंडल एवं बूथ कमेटियों सहित विभिन्न प्रकोष्ठों के पदाधिकारी एवं कार्यकताओं ने एकजुट होकर अपनी आवाज बुलंद की।

खास खबर

पीएम आशा योजना से कोमल कुमार साहू को चना विक्रय में मिली सुविधा

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

योजना से गत वर्ष की तुलना में 52 हजार रूपए का हुआ अतिरिक्त लाभ

प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (पीएम आशा) योजना किसानों के लिए उनकी उपज के उचित मूल्य एवं सुगम विपणन का माध्यम बन रही है। योजना से लाभान्वित होकर ग्राम तेंदूनाला निवासी किसान कोमल कुमार साहू ने रबी मौसम में ग्रीष्मकालीन धान के स्थान पर चना एवं गेहूं की खेती कर न केवल फसल चक्र में बदलाव किया, बल्कि चना विक्रय से अपनी आय में भी वृद्धि की है। कोमल कुमार साहू ने बताया कि पूर्व के रबी मौसम में वे ग्रीष्मकालीन धान की खेती करते थे। इससे जल स्तर पर दबाव पड़ने के साथ सभी रकबे में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराना भी कठिन होता था। कृषि विभाग के मार्गदर्शन से उन्होंने इस वर्ष 2.430 हेक्टेयर में चना तथा शेष रकबे में गेहूं की फसल ली। चना की फसल से उन्हें लगभग 38 क्विंटल उत्पादन प्राप्त हुआ। कृषि विभाग से पीएम आशा योजना के अंतर्गत चना उपार्जन की जानकारी मिलने पर उन्होंने सेवा सहकारी समिति तुमड़ीबोड़ में चना विक्रय हेतु पंजीयन कराया। पंजीयन के बाद उन्होंने अपनी पूरी उपज समिति में विक्रय की, जिसके एवज में उन्हें 2 लाख 23 हजार 250 रूपए की राशि प्राप्त हुई।

उन्होंने बताया कि विक्रय की राशि लगभग 15 दिनों के भीतर प्राप्त हो गई। गत वर्ष की तुलना में उन्हें पीएम आशा योजना से लगभग 52 हजार रूपए का अतिरिक्त लाभ हुआ है। साहू ने बताया कि वे पहले प्राईवेट दुकानों में चना फसल का विक्रय करते थे। लेकिन पीएम आशा योजना से विक्रय करने पर उन्हें अतिरिक्त आय हुई है। साहू ने योजना की सुविधा के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पीएम आशा योजना से किसानों को अपनी उपज के विक्रय में सुविधा मिल रही है। उन्होंने जिले के अन्य किसानों से भी धान के साथ दलहन एवं तिलहन फसलों को अपनाने तथा चना, मसूर, सरसों, मूंग एवं सोयाबीन जैसी फसलों का पीएम आशा योजना के अंतर्गत पंजीयन कराकर विक्रय करने की अपील की।

फसल चक्र परिवर्तन से प्रेरित हो रहे अन्य किसान

कोमल कुमार साहू के फसल चक्र परिवर्तन एवं पीएम आशा योजना के माध्यम से चना विक्रय से प्रभावित होकर ग्राम के अन्य कृषक भी दलहन फसलों की खेती तथा योजना के अंतर्गत अपनी उपज का विक्रय करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। इससे कृषि में विविधीकरण, जल संरक्षण और किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक वातावरण निर्मित हो रहा है।

महतारी वंदन की राशि से बेटी के भविष्य की नींव मजबूत कर रहीं हरिला साहू

मोहला। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से शासन की जनकल्याणकारी योजनाएं महिलाओं और परिवारों को आर्थिक संबल देने के साथ उन्हें भविष्य के लिए बेहतर योजना बनाने का अवसर भी प्रदान कर रही हैं। महतारी वंदन योजना से मिलने वाली राशि का उपयोग महिलाएं अपनी आवश्यकताओं के साथ-साथ परिवार के भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए भी कर रही हैं। ग्राम निवासी श्रीमती हरिला साहू की कहानी इसी सोच और दूरदर्शिता की मिसाल है, जो महतारी वंदन योजना से प्राप्त राशि का एक हिस्सा अपनी बेटी के उज्ज्वल भविष्य के लिए नियमित रूप से बचत कर रही हैं।

हरिला साहू बताती हैं कि महतारी वंदन योजना के तहत उन्हें प्रतिमाह एक हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। वे इस राशि में से 500 रुपए अपनी बेटी के प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना के खाते में जमा करती हैं। इस तरह महतारी वंदन योजना से मिलने वाली सहायता का उपयोग वे बेटी के भविष्य के लिए नियमित बचत के रूप में कर रही हैं। शेष रुपए का उपयोग वे परिवार की घरेलू जरूरतों को पूरा करने में करती हैं। हरिला साहू के लिए यह राशि केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि अपनी बेटी के बेहतर भविष्य की तैयारी का माध्यम बन गई है। उनका कहना है कि योजना के माध्यम से मिलने वाली नियमित राशि से उन्हें यह भरोसा मिला है कि वे छोटी-छोटी बचत के जरिए अपनी बेटी के भविष्य के लिए अभी से मजबूत आधार तैयार कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि सरकार की इस पहल से महिलाओं को अपनी जरूरतों और परिवार के भविष्य से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आर्थिक सहयोग मिल रहा है।

आगास ले उँचास दे, ज्ञान ला प्रकाश दे के उद्घोष से गूंजा बेमेतरा

छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का 10वां दो दिवसीय सम्मेलन में छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य, लोक-अभिव्यक्ति, पुरखा-स्मृति, आंचलिक बोलियों, शब्दकोश निर्माण और डिजिटल युग में क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण जैसे विषयों पर व्यापक हुआ विमर्श

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

विजय बघेल ने किया छत्तीसगढ़ी को आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के प्रयास का उल्लेख

मुख्य अतिथि दुर्ग लोकसभा सांसद विजय बघेल ने पद्मश्री डॉ. सुरेंद्र दुबे, डॉ. खूबचंद बघेल और पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के योगदान का स्मरण किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए संसद में प्रयास जारी रखने की बात कही। संबोधन के समापन पर विजय बघेल ने जनकवि लक्ष्मण मस्तूरिया की रचना मोर संग चलव रे की संगीतमय प्रस्तुति भी दी।

आगास ले उँचास दे, ज्ञान ला प्रकाश दे के उद्घोष के साथ छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग का 10वां प्रांतीय सम्मेलन 26 और 27 सितंबर को बेमेतरा के होटल द किंग्स महल में संपन्न हुआ। दो दिवसीय सम्मेलन में छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य, लोक-अभिव्यक्ति, पुरखा-स्मृति, आंचलिक बोलियों, शब्दकोश निर्माण और डिजिटल युग में क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण जैसे विषयों पर व्यापक विमर्श हुआ। सम्मेलन में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से 500 से अधिक साहित्यकारों, भाषाविदों, कवियों और शोधार्थियों ने सहभागिता की। विभिन्न सत्रों में छत्तीसगढ़ की भाषाई विरासत और साहित्यिक परंपरा के साथ-साथ आधुनिक तकनीक के दौर में क्षेत्रीय भाषाओं के भविष्य पर भी चर्चा की गई।

नागरिक सम्मान से वरिष्ठ साहित्यकारों का सम्मान

सम्मेलन का औपचारिक एवं सांस्कृतिक शुभारंभ नागरिक अभिनंदन और पारंपरिक आदिवासी नृत्य की प्रस्तुति के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र में नगर पालिका अध्यक्ष विजय सिन्हा ने सम्मेलन को बेमेतरा के लिए महत्वपूर्ण साहित्यिक और भाषाई आयोजन बताया।इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार सी.पी. तिवारी, श्याम कश्यप बेचैन, मयाराम नेताम और बीपी मिश्र अनाम को राज्य स्तरीय नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया।

पूर्व विधायक अवधेश सिंह चंदेल ने वरिष्ठ साहित्यकारों के योगदान को रेखांकित किया, जबकि बेमेतरा विधायक दीपेश साहू ने भाषा एवं साहित्य के अकादमिक और दीर्घकालिक विकास के लिए शासन-प्रशासन की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

अकऔर क्षेत्रीय भाषाओं के डिजिटल भविष्य पर चर्चा

सम्मेलन के तकनीकी सत्र में अक आधारित छत्तीसगढ़ राजभाषा गीत एवं गान का प्रदर्शन किया गया। इसके माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं के डिजिटलीकरण, दस्तावेजीकरण और नई तकनीक के जरिए इनके व्यापक प्रसार की संभावनाओं पर चर्चा हुई। डॉ. अंकुर शुक्ला (अंकुर विनोद खावर) ने अक तकनीक से तैयार रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए क्षेत्रीय भाषाओं के डिजिटल भविष्य पर विचार रखा। वक्ताओं ने अकको केवल किसी व्यक्ति की उपलब्धि के रूप में नहीं, बल्कि भाषाई संरक्षण, दस्तावेजीकरण और डिजिटल अभिलेखीकरण के संभावित माध्यम के रूप में देखा।

पुरखा के सुरता में साहित्यिक विरासत का पुनर्पाठ

दूसरे दिन आयोजित पुरखा के सुरता सत्र में छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्यकारों और उनकी साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत पर चर्चा हुई। सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ भाषाविद् डॉ. चितरंजन कर ने की और संचालन राघवेंद्र दुबे ने किया। अरुण कुमार निगम ने जनकवि कोदूराम दलित के काव्य एवं जीवन-दर्शन, श्रीमती शशि दुबे ने पद्मश्री डॉ. सुरेंद्र दुबे की कृतियों तथा डॉ. परदेशी राम वर्मा और डूमन लाल ध्रुव ने राजगीत के रचयिता डॉ. नरेंद्र देव वर्मा पर शोध-पत्र प्रस्तुत किए। छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के अध्यक्ष प्रभात मिश्र ने हरि ठाकुर के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक योगदान पर विचार रखे।

आंचलिक बोलियों की विविधता पर भी विमर्श

छठवें सत्र में प्रादेशिक बोलियों और आंचलिक अभिव्यक्तियों पर चर्चा हुई। शकुंतला तरार ने हल्बी भाषा में वक्तव्य प्रस्तुत कर बस्तर की भाषाई और सांस्कृतिक परंपरा को सामने रखा। सरगुजा से आए श्रीश मिश्र ने सरगुजिहा और छत्तीसगढ़ी के बीच भाषाई साम्य पर विचार रखा, जबकि डॉ. इशा बेला लकड़ा ने कुड़ुख भाषा पर वक्तव्य दिया। सत्र की अध्यक्षता बलदाऊ राम साहू ने की।

1921 से 2026 तक छत्तीसगढ़ी शब्दकोश की यात्रा

सम्मेलन में छत्तीसगढ़ी शब्दकोश निर्माण और Lexicography की 1921 से 2026 तक की यात्रा पर शोधपरक चर्चा हुई। इसमें 1921 में रेवरेंड एमाईल वोल्फगांग मेंजल द्वारा प्रकाशित प्रारंभिक छत्तीसगढ़ी शब्दकोश से लेकर अलग-अलग कालखंडों में हुए शब्द-संग्रह और शब्दकोश निर्माण के प्रयासों को रेखांकित किया गया। वक्ताओं ने 1965 के लगभग 60 हजार शब्दों वाले संकलन, 2011 में डॉ. महावीर अग्रवाल के प्रयास, 2012 में छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के 25 हजार शब्दों वाले क्रांति शब्दकोश, 2019 में SCERT द्वारा कक्षा 1 से 8 के लिए तैयार आखर कोष और 2021 में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा जारी द्विभाषी शब्दकोश का उल्लेख किया। ग्रामीण और ठेठ आंचलिक शब्दावली के व्यवस्थित दस्तावेजीकरण तथा डिजिटल शब्द-संसाधनों के विस्तार की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया। सम्मेलन की साहित्यिक संध्या में प्रसिद्ध गीतकार एवं कवि मीर अली मीर ने काव्य-पाठ किया। उन्होंने युवा और वरिष्ठ कवियों को मंच देने के लिए आयोग की पर्ची-बॉक्स प्रणाली का उल्लेख किया। आयोजन समिति के अनुसार, इस व्यवस्था से विभिन्न रचनाकारों को अपनी प्रस्तुति देने का अवसर मिला और कवि सम्मेलन देर रात करीब 2 बजे तक चला।

आयोजन में इनकी रही प्रमुख सहभागिता

सम्मेलन में सांसद विजय बघेल, विधायक दीपेश साहू, पूर्व विधायक अवधेश सिंह चंदेल, नगर पालिका अध्यक्ष विजय सिन्हा, आयोग की सचिव डॉ. अभिलाषा बेहार और अध्यक्ष प्रभात मिश्र सहित अन्य अतिथि उपस्थित रहे। आयोजन एवं व्यवस्थापन में आदर्श दुबे, सुनैना मार्को, पद्मलोचन शर्मा, स्थानीय आयोजन समिति के संयोजक रामानंद त्रिपाठी और उनकी प्रबंधन टीम की भूमिका रही।

भाषा संरक्षण से भविष्य की ओर बढ़ने का संदेश

बेमेतरा में आयोजित 10वें प्रांतीय सम्मेलन में छत्तीसगढ़ी भाषा की साहित्यिक परंपरा, लोक-स्मृति और आंचलिक विविधता को आधुनिक अकादमिक विमर्श तथा डिजिटल तकनीक से जोड़ने पर जोर रहा। दो दिनों तक चले विभिन्न सत्रों में साहित्यिक विरासत के पुनर्पाठ से लेकर शब्दकोश निर्माण, क्षेत्रीय बोलियों के संरक्षण और अक जैसी नई तकनीकी संभावनाओं पर संवाद हुआ। सम्मेलन का केंद्रीय संदेश यह रहा कि भाषा संरक्षण केवल पुरानी विरासत को सुरक्षित रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी शब्द-संपदा, साहित्य, लोक-अभिव्यक्तियों और सांस्कृतिक स्मृति को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के साथ उसके भविष्य के लिए नए माध्यम विकसित करना भी जरूरी है।

सेवा संकल्प अभियान के तहत जिला चिकित्सालय में हुआ संकल्प वाचन व स्वास्थ्य परीक्षण

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जिला प्रशासन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, समाज कल्याण विभाग तथा माय भारत के संयुक्त तत्वावधान में आज जिला चिकित्सालय राजनांदगांव के कांफ्रेंस हॉल में नशामुक्ति एवं वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल के प्रति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवाओं, खिलाड़ियों, विद्यालयों एवं शासकीय बौद्धिक दिव्यांगता वाले विशेष विद्यालय के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, प्रशिक्षकों एवं माय भारत के स्वयंसेवकों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम में भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा संचालित नशामुक्ति जनजागरूकता अभियान अंतर्गत युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराते हुए नशामुक्ति का संदेश एवं संकल्प वाचन कराया गया। साथ ही समाज के वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल, सम्मान और उनके प्रति जिम्मेदारी निभाने का भी संकल्प दिलाया गया।

उप संचालक समाज कल्याण विभाग श्रीमती वैशाली मरडवार ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं के बीच इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नशाखोरी से व्यक्ति, परिवार और समाज को होने वाली क्षति के प्रति जागरूक करना है। उन्होंने जिले एवं प्रदेश में नशामुक्ति के लिए संचालित विभिन्न केन्द्रों की जानकारी देते हुए बताया कि राजनांदगांव में समाज कल्याण विभाग के माध्यम से अनुदानित समता जन कल्याण समिति द्वारा संचालित नशामुक्ति केन्द्र से अब तक सैकड़ों लोग लाभान्वित हो चुके हैं। कार्यक्रम के पश्चात स्वस्थ जीवनशैली विषय पर डॉ. विकास राठौर तथा नशामुक्ति एवं नशे की लत से बाहर निकलने के उपायों पर डॉ. रूपा मानकर द्वारा उपयोगी जानकारी दी गई।

विशेषज्ञों ने युवाओं को नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, सकारात्मक दिनचर्या तथा नशे से पूर्ण दूरी बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में जिला चिकित्सालय के विषय विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा उपस्थित युवाओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। आयोजन में बड़ी संख्या में युवा, खिलाड़ी, छात्र-छात्राएं, शिक्षक, प्रशिक्षक, कोच तथा माय भारत के समन्वयक शुभजीत सहित संबंधित विभागों के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

लगातार वर्षा को देखते हुए किसानों को फसलों में कीट और रोग प्रबंधन की सलाह

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

जिले में विगत दो दिनों से लगातार वर्षा एवं वातावरण में अधिक नमी को देखते हुए कृषि विभाग द्वारा किसानों को धान, सोयाबीन, अरहर, उड़द, मूंग एवं कपास की फसलों में कीट एवं रोगों की नियमित निगरानी तथा आवश्यकता के अनुसार अनुशंसित दवाओं के उपयोग की सलाह दी गई है। लगातार वर्षा के कारण खेतों में नमी एवं आर्द्रता बढ ? से फफूंदजनित रोगों के साथ-साथ कुछ कीटों का प्रकोप बढ ? की संभावना रहती है। किसान को फसल की वर्तमान अवस्था के अनुसार आवश्यक उपाय अपनाने का सुझाव दिया गया है।

वर्तमान में धान की फसल लगभग 70 से 80 दिन की होकर दाना भरने की प्रारंभिक अवस्था में है। इस अवस्था में भूरा माहू, पैनिकल माइट, गंधी बग, तना छेदक एवं पत्ती लपेटक तथा ब्लास्ट, भूरा धब्बा एवं शीथ ब्लाइट की विशेष निगरानी करें। पौधे के निचले हिस्से में छोटे भूरे कीटों (भूरा माहू) का समूह दिखाई देना तथा अधिक प्रकोप में पौधों का पीला होकर सूखना इसके प्रमुख लक्षण हैं। इसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एसएल 100 मिली प्रति एकड़ या डाइनोटेफ्यूरान 10 प्रतिशत + पाइमेट्रोजीन 40 प्रतिशत डब्ल्यूजी 100 ग्राम प्रति एकड़ दवा का उपयोग कर सकते है। भूरा माहू वाले खेत में अनावश्यक रूप से बार-बार कीटनाशी का प्रयोग न करें तथा अधिक मात्रा में यूरिया का उपयोग न करें।

बालियों एवं दानों के विकास की अवस्था में पैनिकल माइट के कारण दाने ठीक से विकसित नहीं हो पाते। लक्षण दिखाई देने पर कृषि विशेषज्ञ से पुष्टि कर नियंत्रण करें। इसके नियंत्रण हेतु डायफेन्थियूरॉन 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी 1 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या प्रोपिकोनाजोल 1 मिली प्रति लीटर पानी का उपयोग संबंधित उत्पाद के लेबल एवं अनुशंसा के अनुसार किया जा सकता है।

गंधी बग के कारण दूधिया दानों से रस चूसने के कारण दाने अधभरे एवं खराब हो सकते हैं। इसके नियंत्रण के लिए लैम्ब्डा-साइहेलोथ्रिन 5 प्रतिशत ईसी 100 मिली प्रति एकड़ का प्रयोग प्रकोप की स्थिति में किया जा सकता है। तना छेदक में बीच की पत्ती सूखना तथा अधिक प्रकोप में सफेद बालियां दिखाई देना प्रमुख लक्षण है। पत्ती लपेटक में पत्तियां मुड़कर नली जैसी हो जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत + साइपरमेथ्रिन 4 प्रतिशत ईसी 400 मिली प्रति एकड़ अथवा क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 9.3 प्रतिशत + लैम्ब्डा-साइहेलोथ्रिन 4.6 प्रतिशत जेडसी 100 मिली प्रति एकड़ प्रकोप की स्थिति में अनुशंसित दवा का प्रयोग करें।

ब्लास्ट रोग होने पर पत्तियों पर नाव के आकार के भूरे धब्बे तथा बाली की गर्दन पर काले-भूरे घाव इसके प्रमुख लक्षण हैं। इसके नियंत्रण के लिए ट्राइसाइक्लाजोल 75 प्रतिशत डब्ल्यूपी 120 ग्राम प्रति एकड़ का प्रयोग किया जा सकता है। भूरा धब्बा रोग होने पर पत्तियों पर गोल या अंडाकार भूरे धब्बे दिखाई देने पर भूरा धब्बा रोग की संभावना रहती है। इसके नियंत्रण के लिए मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यूपी 1.5 से 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर का प्रयोग अनुशंसित मात्रा में करें। शीथ ब्लाइट होने पर पत्ती की खोल पर हरे-धूसर अथवा भूरे रंग के अंडाकार धब्बे दिखाई देना इसका प्रमुख लक्षण है। हेक्साकोनाजोल 5 प्रतिशत एससी + 350 मिली प्रति एकड़ का प्रयोग रोग की स्थिति में किया जा सकता है।

सोयाबीन की फसल फली बनने एवं दाना विकसित होने की अवस्था में है। लगातार नमी के कारण तना मक्खी, गर्डल बीटल, पत्ती खाने वाली इल्लियों, तंबाकू की इल्ली एवं सफेद मक्खी की निगरानी करें। रोगों में रस्ट, पत्ती धब्बा एवं एन्थ्रेक्नोज के लक्षणों पर विशेष ध्यान दें। पत्तियों पर पीले-भूरे धब्बे, पत्तियों का झड ?ा अथवा अन्य असामान्य लक्षण दिखाई देने पर रोग की पहचान कर अनुशंसित फफूंदनाशी का प्रयोग करें। मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यूपी + 1.5 से 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर का उपयोग संबंधित रोग की स्थिति में किया जा सकता है। पीला मोजेक दिखाई देने पर रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें तथा सफेद मक्खी का नियंत्रण करें।

अरहर की फसल शाखा विकास एवं फूल आने की प्रारंभिक अवस्था में है। इस समय फली छेदक, पत्ती खाने वाली इल्लियों एवं रस चूसक कीटों की निगरानी करें। खेत में पक्षियों के बैठने के लिए पक्षी बैठका लगाएं तथा फेरोमोन ट्रैप का उपयोग करें। कीटों का प्रकोप बढ ? पर फसल पर पंजीकृत एवं अनुशंसित कीटनाशी का उपयोग निर्धारित मात्रा में करें।

उड़द एवं मूंग की फसल फूल एवं फली बनने की अवस्था में है। इस समय फली छेदक, तंबाकू की इल्ली, सफेद मक्खी, माहू एवं थ्रिप्स की निगरानी करें। साथ ही पीला मोजेक एवं पत्ती धब्बा रोग के लक्षणों पर विशेष ध्यान दें। पीला मोजेक से प्रभावित पौधों को खेत से निकालकर नष्ट करें तथा सफेद मक्खी के नियंत्रण पर विशेष ध्यान दें।

कपास की फसल फूल एवं टिंडे बनने की अवस्था में है। इस अवस्था में माहू, जेसिड, सफेद मक्खी, थ्रिप्स एवं गुलाबी सुंडी की नियमित निगरानी करें। विशेष रूप से गुलाबी सुंडी के लिए फेरोमोन ट्रैप लगाकर निगरानी करें तथा फूल एवं टिंडे को खोलकर अंदर की सुंडी की स्थिति देखें। प्रकोप की पुष्टि होने पर ही अनुशंसित कीटनाशी का प्रयोग करें।

किसान प्रारंभिक प्रकोप की स्थिति में जैविक उपायों को भी अपना सकते है। इसके लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी, स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस, ब्यूवेरिया बेसियाना, मेटाराइजियम एनीसोप्ली, बैसिलस थुरिन्जिएन्सिस (बीटी) तथा नीम आधारित उत्पाद व अजाडिरैक्टिन का उपयोग संबंधित उत्पाद के लेबल पर दी गई मात्रा एवं विधि के अनुसार किया जा सकता है।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

-:: ईश्तहार ::-

रा.प्र.क्रं. /202609101000134/-ब-121 वर्ष 2025-26

एदत् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक/आवेदिका-राकेश कुमार पिता हेलेन्द्र प्रसाद निवासी-सेक्टर 11 खुर्सीपार भिलाई तह. व जिला दुर्ग, द्वारा अपने स्वयं की जन्म दिनांक 02.02.2003 को सेक्टर 11 खुर्सीपार भिलाई तह. व जिला दुर्ग (छ.ग.) में होने के करण जन्म प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। इस संबंध में आवेदक द्वारा अनुपलब्धता प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, आवेदन पत्र, पार्षद द्वारा प्रस्तुत प्रमाण पत्र, अंकसूची, आधार कार्ड की छाया प्रति प्रस्तुत किया गया है।

अतः जिस किसी व्यक्ति एवं संस्था को इस संबंध में आपत्ति एवं दावा उजर पेश करना हो तो पेशी दिनांक 30/09/2026 तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति दावा या उजर प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद में प्राप्त आपत्ति आवेदन पर कोई कार्यवाही नही किया जावेगा।

आज दिनांक 21/09/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पदमुद्रा से प्रकाशन हेतु जारी किया गया हैं।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

सुरों की महफिल में बिखरी संगीत की बहार, शकील और रूपाली ने बांधा समां

बरमेचा गीतों की बहार व सांध्य दैनिक नई दृष्टि बिंदु और दुर्ग-भिलाई की स्थानीय संगीत समितियों के संयुक्त तत्वावधान में भव्य संगीत संध्या का हुआ भव्य आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग-भिलाई

बरमेचा गीतों की बहार एवं सांध्य दैनिक नई दृष्टि बिंदु द्वारा दुर्ग-भिलाई की स्थानीय संगीत समितियों के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को गौरव पथ स्थित सतनामी आश्रम भवन में भव्य संगीत संध्या का आयोजन हुआ। संयोजक कैलाश जैन बरमेचा के नेतृत्व में सजे इस कार्यक्रम में देर रात तक श्रोता झूमते रहे।

स्टार परफॉर्मर

नागपुर से आए रफी साहब की आवाज के नाम से मशहूर प्रसिद्ध गायक व वाद्य कलाकार शकील अली ने मंच से उतरकर श्रोताओं के बीच जाकर वाद्य बजाते हुए गीत पेश किए, जो कार्यक्रम का सबसे बड़ा आकर्षण रहा। वहीं छत्तीसगढ़ी एल्बम गायिका रूपाली साखरे (लता मंगेशकर की हूबहू आवाज) ने अपनी सुमधुर प्रस्तुति से चार चांद लगा दिए।

स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुति

नीतू गोस्वामी, डॉ. रविंद्र पाटील, इस्लाम खान, गीता सिंह, जाहिद अली, साधना कुलदीप, आफताब आलम, प्रकाश सोनी, तुलसी साहू ने अपनी आवाज का जादू बिखेरा।

सदाबहार नगमों की गूंज

सत्यम शिवम सुंदरम, नाम गुम जाएगा, ना तुम हमें जानो, आज तुमको पुकारे, कितनी खूबसूरत ये तस्वीर, गुलाबी आंखें, ओ मेहबूबा, दिल में तुझे, मुझे इश्क है तुझी से, आपकी नजरों ने, आशाओं के सावन में, अजी ऐसा मौका, हम तेरे प्यार में, पत्ता पत्ता, क्या खूब लगती हो, हे अपना दिल, जीना क्या अजी, मेरे सपनों की, छुप गए सारे, सारे शहर में, मैं जट यमला, आजकल तेरे मेरे जैसे गीतों ने पुराने दौर की याद दिला दी। लाइव बैंड अमित पाल एंड टीम ने संगीत को जीवंत किया।

संगीत के साथ साइबर जागरूकता

कार्यक्रम का सामाजिक सरोकार भी दिखा। साइबर उप निरीक्षक एवं नोडल अधिकारी डॉ. संकल्प राय व एक्स इंडियन आर्मी हरप्रीत सिंह ने 5 मिनट के स्पीच में अनजान लिंक, डळढ शेयर, फर्जी बैंक कॉल, ऑनलाइन ठगी से बचने के उपाय बताए। सभागृह तालियों से गूंज उठा। साथ ही डांडिया से स्वागत - अतिथियों का अभिनंदन मेघा कौर एवं टीम की डांडिया प्रस्तुति से हुआ।

मंच पर उपस्थित अतिथिगण

मुख्य अतिथि - महापौर श्रीमती अलका बाघमार, अध्यक्षता - SSP विजय अग्रवाल (प्रतिनिधि के रूप में डॉ. संकल्प राय मौजूद), विशेष अतिथि - BSF कमांडेंट विवेक श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि - हरप्रीत सिंह, साहित्यकार एवं SBI जनसंपर्क अधिकारी फरीदा शाहीन, वरिष्ठ अधिवक्ता शबनम खान, सहाना कुरैशी, डॉ. प्रीति अजय बेहरा, रऊफ कुरैशी डायरेक्टर अल्पसंख्यक बचत बैंक, लायन अनीता अग्रवाल, लायन आकांक्षा मिश्रा। वरिष्ठ पत्रकार आलोक तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार खिलावन सिंह चौहान संगीता मिश्रा सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

भव्य व्यवस्था - साउंड-LED - स्वर संगम साउंड सर्विस, टेंट-लाइट-कैटरिंग - राजेंद्र टेंट हाउस और फोटोग्राफी - बिट्टू साहू मॉडल फोटोग्राफी की रही।

सहयोग - आयोजन में जाहिद अली, हाजी साजिद मिर्जा, नावेद राजा दुर्गवी, तुलसी सोनी, ईश्वर सिंह राजपूत, दिनेश जैन सराफ सहित सभी संगीत संस्थाओं का योगदान रहा।

प्रायोजक - डोनेआर इंडस्ट्रीज, शिबा होजियरी, प्रवीण देशलेहरा गारमेंट्स, जादूनाथ एवं चंद्रमुखी सिंह चैरिटेबल ट्रस्ट, हायर जींस, नई दृष्टि बिंदु, बरमेचा एलिवेटर। आयोजन समिति ने सभी का आभार माना और कहा कि दुर्ग-भिलाई में संगीत की यह परंपरा जारी रहेगी।

मुख्यमंत्री साय के निमंत्रण पर राष्ट्रपति ने स्वीकार किया बस्तर दशहरा में शामिल होने का आमंत्रण

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ की समृद्ध जनजातीय संस्कृति, लोक परंपराओं और गौरवशाली विरासत के प्रतीक बस्तर दशहरा के मुरिया दरबार में देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु शामिल होंगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निमंत्रण पर राष्ट्रपति मुर्मु ने 23 अक्टूबर 2026 को जगदलपुर में आयोजित होने वाले मुरिया दरबार में शामिल होने का आमंत्रण स्वीकार कर लिया है।

राष्ट्रपति मुर्मु को मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का निमंत्रण पत्र सौंपने के अवसर पर केंद्रीय मंत्री तोखन साहू, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल, बस्तर लोकसभा सांसद महेश कश्यप तथा संस्कृति एवं पर्यटन विभाग के सचिव डॉ. एस. भारतीदासन उपस्थित रहे।

राष्ट्रपति की उपस्थिति बस्तर की सांस्कृतिक विरासत के लिए गौरव का अवसर मां दंतेश्वरी को समर्पित बस्तर दशहरा अपनी विशिष्ट जनजातीय परंपराओं, लोक आस्था और सामुदायिक सहभागिता के लिए देशभर में अपनी अलग पहचान रखता है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने फरवरी 2026 में जगदलपुर में आयोजित बस्तर पंडुम के अवसर पर बस्तर दशहरा को जनजातीय संस्कृति और भाईचारे को अनूठा उदाहरण बताया था। उन्होंने बस्तर की प्राचीन परंपराओं और संस्कृति को संरक्षित करते हुए विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने की आवश्यकता पर भी जोर दिया था। ऐसे में बस्तर दशहरा के मुरिया दरबार में राष्ट्रपति की प्रस्तावित उपस्थिति बस्तर की सांस्कृतिक पहचान, जनजातीय परंपराओं और लोक विरासत के लिए विशेष गौरव का अवसर होगी।

विधायक चंद्राकर की मौजूदगी में 129 आवेदनों का किया निराकरण

नई दृष्टिबिंदु / रिसाली-भिलाई

पूरे प्रदेश में नगरीय निकाय स्तर पर चल रहे सेवा संकल्प शिविर में नगर पालिक निगम रिसाली ने मौके पर 129 आवेदनों का निराकरण किया। पुरैना के वार्ड क्र. 38 स्टोर पारा, वार्ड 39 एन.एस.पी.सी.एल., वार्ड 40 पुरैना बस्ती के लिए सामुदायिक भवन में शिविर का आयोजन किया गया था। यहां पर 135 लोगों ने मांग और शिकायत के आवेदन प्रस्तुत किए। शिविर में दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर समेत वार्ड पार्षद रंजीता बेनुआ व पार्वती महानंद विशेष रूप से मौजूद थे।

इस अवसर पर दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने शिविर में आए नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि यह शिविर प्रधानमंत्री के लगातार 25 वर्ष अनवरत की जाने वाली सेवा के लिए आयोजित है। उनके और मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में शिविर का आयोजन किया जा रहा है। नागरिकों को उन्होंने आश्वस्त किया कि प्रत्येक आवेदनों का निराकरण गंभीरता से किया जाएगा। दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने शिविर में आए नागरिकों से बातचीत भी की। उन्होंने निगम द्वारा लगाए स्टॉल का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर मंच पर प्रमुख रूप से रिसाली मण्डल अध्यक्ष अनूपम साहू व पुरैना मण्डल अध्यक्ष राजू जंघेल समेत भाजपा के कार्यकर्ता मौजूद थे।

पटवारी को दी सीख

दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने नागरिकों से बातचीत की। इसी बीच खुलासा हुआ कि शिविर में पटवारी अनुपस्थित है। उन्होंने आय प्रमाण पत्र बनाने हो रही परेशानियों का हवाला देते हुए तत्काल पटवारी से चर्चा कर शिविर में उपस्थित होने का निर्देश दिए। साथ ही विधायक ने विद्युत मण्डल के अधिकारियों से चर्चा कर नागरिकों की समस्याओं को दूर करने कहा।

आवेदनों पर एक नजर

कुल प्राप्त आवेदन - 135
मांग - 103
शिकायत - 32
मौके पर निराकरण - 129
शेष - 6

महिलाओं के उत्साह से सजा आंगन, सभापति नेहा बाबा वर्मा ने किया सहभागिता का आह्वान

मेहंदी-बिंदी प्रतियोगिता, पोषण व्यंजन प्रदर्शनी व गोदभराई कार्यक्रम में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

नई दृष्टिबिंदु / पाटन

वार्ड क्रमांक 04 अखरा में आयोजित आंगन मिलन सेवा कार्यक्रम में महिलाओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता देखने को मिली। कार्यक्रम में नगर पंचायत पाटन की सभापति एवं वार्ड पार्षद श्रीमती नेहा बाबा वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुई। उनके मार्गदर्शन एवं उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं के लिए मेहंदी-बिंदी लगाओ प्रतियोगिता, पोषण माह के अंतर्गत पौष्टिक व्यंजन प्रदर्शनी तथा गोदभराई कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

श्रीमती नेहा बाबा वर्मा ने महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आंगनबाड़ी केंद्र महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण एवं जागरूकता का महत्वपूर्ण केंद्र हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से महिलाओं को एक-दूसरे से जुड़ने, अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने तथा पोषण और स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलता है। उन्होंने महिलाओं से कार्यक्रमों में इसी तरह सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया तथा आंगनबाड़ी कार्यकताओं के प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम के दौरान महिलाओं ने मेहंदी-बिंदी प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। पोषण माह के अंतर्गत विभिन्न पौष्टिक व्यंजनों की प्रदर्शनी के माध्यम से संतुलित एवं पोषणयुक्त आहार का संदेश दिया गया। वहीं गोदभराई कार्यक्रम के माध्यम से गर्भवती माताओं के पोषण, स्वास्थ्य एवं सुरक्षित मातृत्व के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती लता कश्यप, पूर्णिमा सिन्हा, रोशनी कुर्रे, मीना देवांगन, संतोषी जोशी, सिंधिया साहू, नीता देवांगन, किरण शर्मा, हीरा देवांगन एवं राजेश्वरी वर्मा का सहयोग रहा। कार्यक्रम में मोहिनी चक्रधारी, पद्मा चक्रधारी, तनुजा विश्वकर्मा, रुखमणी देवांगन, नीतू कौशिक, पल्लवी बंछोर, त्रिवेणी विश्वकर्मा, डिगेश्वरी, संतोषी देवांगन, मालती वर्मा, विभा वर्मा, संतोषी यादव, मालती यादव, गायत्री देवांगन, हेमेश्वरी देवांगन, सीमा वर्मा, ललिता, जानकी, पूजा यादव, सुष्मा चक्रधारी, जया पारधी, चित्रलेखा, गोदावरी बंछोर, उर्मिला वर्मा, कमलेश्वरी, रीना, लता वर्मा, गीता ठाकुर, अनुसुईया ठाकुर, सीमा, प्रतिमा, सुमन, जया एवं बबिता सहित बड़ी संख्या में नगर की महिलाएं उपस्थित रहीं।

तीन दिन तक चला चक्काजाम खत्म, एसडीएम के आश्वासन के बाद ग्रामीणों ने खोला रास्ता

बालोद। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले के डौंडी विकासखंड के आड़ेझर गांव में पेयजल समस्या को लेकर ग्रामीणों का तीन दिनों से चल रहा चक्काजाम सोमवार को समाप्त हो गया। ग्रामीणों ने दल्लीराजहरा-महामाया मार्ग पर बैठकर गांव में पीने के पानी की व्यवस्था की मांग को लेकर प्रदर्शन किया था। प्रशासन की ओर से लिखित आश्वासन मिलने के बाद ग्रामीणों ने आंदोलन खत्म किया। ग्रामीणों की मांग थी कि गांव में पीने योग्य पानी उपलब्ध कराया जाए और बोइरडीही जलाशय से पानी की व्यवस्था की जाए। जंगल के रास्ते पानी लाने को मजबूर ग्रामीण ग्रामीणों का कहना है कि आड़ेझर गांव में पीने के पानी की समस्या लंबे समय से बनी हुई है।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100